मिशन शिक्षण संवाद

पूर्ण संख्याएँ (Whole Numbers) :- एक वृक्ष पर 9 चिड़ियाँ बैठी हैं। कुछ समय बाद वर्षा होने लगी एक एक करके सभी चिड़ियाँ पेड़ पर से उड़ गयी। अब पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ बची होंगीं? इसका जबाब क्या होगा? 'कुछ नहीं' या 'एक भी नहीं बची' अर्थात इसे गणित की भाषा में शून्य '0' कहेंगें या लिखेंगें ।

जब हम '0' को प्राकृतिक संख्याओं के साथ सम्मिलित कर लेते हैं तो प्राप्त संख्याएँ 'पूर्ण संख्याएँ' कहलाती हैं।

0, 1, 2, 3, 4, ... पूर्ण संख्याएँ हैं।

0 सबसे छोटी पूर्ण संख्या है।

सबसे बड़ी पूर्ण संख्या परिभाषित नहीं है।

संख्या-रेखा पर पूर्ण संख्याओं का प्रदर्शन (Representation of whole numbers on number line) :- संख्या-रेखा पर पूर्ण संख्याओं को प्रदर्शित करने के लिए 0 से प्रारम्भ करके दायीं तरफ समान दूरी पर प्रदर्शित करते हैं। जैसे-

<----.-----.-----.-----.-----.-----.-----.-----.---->

0 1 2 3 4 5 6 7

क्रमागत पूर्ण संख्याएँ (successive whole numbers) :- ऐसी पूर्ण संख्याएँ जो एक क्रम में हो क्रमागत पूर्ण संख्याएँ कहलाती हैं। दो क्रमागत पूर्ण संख्याओं का अन्तर सदैव 1 होता है। जैसे 13, 14 और 15 क्रमागत पूर्ण संख्याएँ हैं।

तीन क्रमागत पूर्ण संख्याओं में पहली और तीसरी संख्याओं के योगफल का आधा बीच की संख्या होती है।

Example :- तीन क्रमागत पूर्ण संख्याओं में पहली और तीसरी संख्याओं के योगफल 40 है। संख्याएँ ज्ञात कीजिए।

हल :- पहली और तीसरी संख्या का योगफल= 40

∴ पहली और तीसरी संख्या के योगफल का आधा = 40/2

=20

∴ बीच की संख्या = 20

अतः संख्याएँ 19, 20, 21 है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1- सबसे छोटी पूर्ण संख्या बताइए।

प्रश्न 2- संख्या रेखा पर निम्नांकित पूर्ण संख्याओं को प्रदर्शित कीजिए।

0, 1, 2, 3, 4, 5

प्रश्न 3- सबसे बड़ी पूर्ण संख्या बताइए।

प्रश्न 4- तीन क्रमागत पूर्ण संख्याओं में पहली और तीसरी का योगफल 28 है। संख्याएँ ज्ञात कीजिए।

प्रश्न 5- संख्या 1 की पूर्ववर्ती संख्या तथा अनुवर्ती संख्या बताइए।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- GYANESHWAR P JAUNPUR

पूर्ण संख्याओं पर संक्रियाएँ (operation on the whole numbers) :-

पूर्ण संख्याओं में योग का प्रगुण :- (i) योग का संवरक प्रगुण :-

पूर्ण संख्या + पूर्ण संख्या = योगफल	पूर्ण संख्या है या नहीं है
5 + 7 = 12	है
3 + 0 = 3	है
0 + 6 = 6	है
0 + 0 = 0	है

यहाँ हम देखते है कि प्रत्येक स्थिति में दो पूर्णांकों का योग सदैव पूर्णांक ही आता है अतः **दो पूर्ण संख्याओं का योगफल सदैव पूर्ण संख्या होता है। यह पूर्ण संख्याओं के योग का संवरक प्रगुण है ।**

(ii) योग का क्रम-विनिमेय प्रगुण :- कोई दो पूर्ण संख्याएँ जैसे 3 और 5 को लेकर जोड़ने पर, 5 + 3 = 8

पुनः क्रम बदलकर जोड़ने पर, 3 + 5 = 8

दोनों स्थितियों में योगफल की तुलना करने पर, 3 + 5 = 5 + 3 = 8 अतः **दो पूर्ण संख्याओं के योगफल पर संख्याओं के क्रम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।**

संख्या रेखा द्वारा

इसी प्रकार दूसरी संख्या रेखा 5 + 3 का योगफल

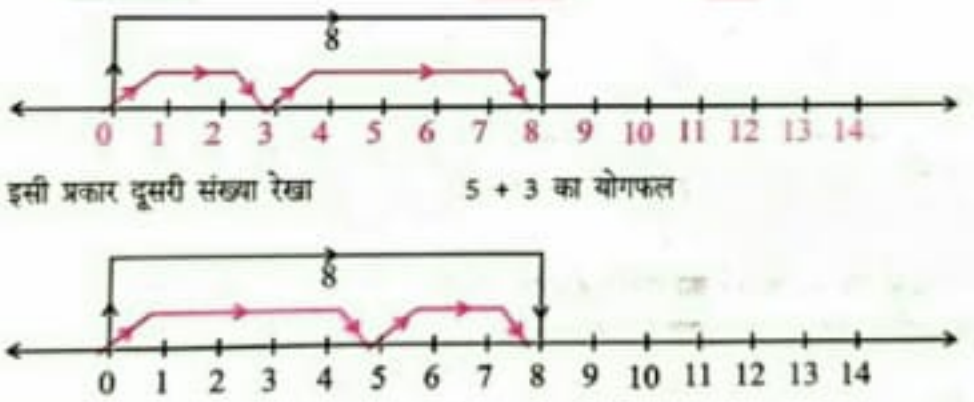

(iii) योग का तत्समक अवयव (Additive Identity) :- शून्य को कुछ पूर्ण संख्याओं से जोड़ते हैं, 0 + 0 = 0 या 0 + 1 = 1 या 1 + 0 = 1

या 3 + 0 = 0 + 3 = 3

अतः **किसी पूर्ण संख्या में यदि शून्य को जोड़ा जाता है तो योगफल वही संख्या होती है। इसी कारण '0' को पूर्ण संख्याओं में योग का तत्समक अवयव कहते हैं।शून्य को पूर्ण संख्याओं के लिए 'योज्य तत्समक' भी कहते हैं।**

उत्तर क्रमांक- 7

1. 0

2.<------------------------------->

0 1 2 3 4 5

3. अपरिभाषित 4. 13, 14, 15

5. पूर्ववर्ती 0 अनुवर्ती 2

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1- निम्न पूर्ण संख्याओं के युग्मों को जोड़कर ज्ञात कीजिए कि क्या संवरक प्रगुण का पालन करती है ?

(a) 6, 9 (b) 7, 9 (c) 15, 17 (d) 19, 30

प्रश्न 2 - निम्न पूर्ण संख्याओं के युग्मों को जोड़कर ज्ञात कीजिए कि क्या योग के क्रम-विनिमेय का पालन करती है?

(a) 7, 6 (b) 9, 13 (c) 17, 11 (d) 15, 20

प्रश्न 3 - किस संख्या को योग का तत्समक अवयव कहते है?

विषय- गणित पाठ- पूर्ण संख्याएँ कक्षा - 6

प्रकरण- पूर्ण संख्याओं पर संक्रियाएं क्रमांक - 9

मिशन शिक्षण संवाद

योग का साहचर्य प्रगुण :- यदि हम 3, 2 और 4 को आपस में जोड़े तो इसे निम्न दो तरीकों से जोड़ सकते है -

3 + (2 + 4) = 3 + 6 = 9

(3 + 2) + 4 = 5 + 4 = 9

संख्या रेखा द्वारा

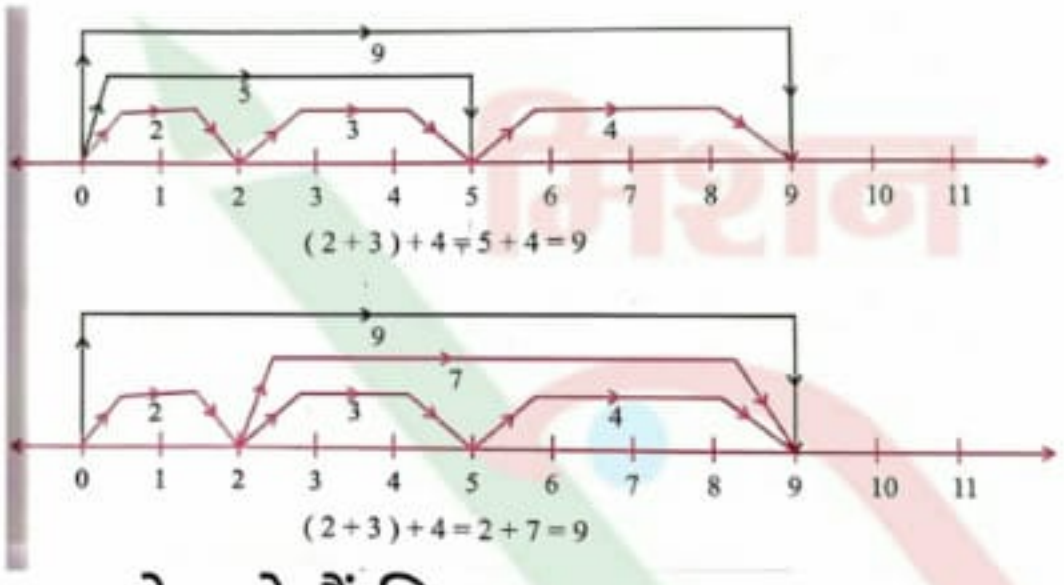

हम देखते हैं कि

(2 + 3) + 4 = 2 + (3 + 4)

9 = 9

अत: तीन पूर्ण संख्याओं को क्रम में जोड़ते समय किन्ही दो पूर्ण संख्याओं का समूह पहले बना लेने से योगफल में अंतर नहीं पड़ता है यह योग संक्रिया का साहचर्य प्रगुण है।

पूर्ण संख्याओं पर घटाने का संवरक प्रगुण :-

हम देखते है कि

6 - 5 = 1 पूर्ण संख्या है।

8 - 0 = 8 पूर्ण संख्या है।

0 - 7 = -7 पूर्ण संख्या नहीं है।

3 - 9 = -6 पूर्ण संख्या नहीं हैं।

जब छोटी संख्या में से बड़ी संख्या घटायी जाती है तो पूर्ण संख्या नहीं प्राप्त होती है। अत: पूर्ण संख्याओं पर घटाने का संवरक प्रगुण का पालन नहीं करती है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1• निम्नांकित तथ्यों को संख्या रेखा पर दिखाइए ।

(a) 5 + 4 = 9 (b) 0+ 5 = 5

(c) 2 + 3 + 4 = 9

प्रश्न 2• निम्नांकित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(a) (234 + 456) + 789 = [] + (456 + 789)

(b) 2889 + 0 = []

(c) 34 + 12 = 12 + []

प्रश्न 3• निम्न संख्या रेखा पर अंकित योग तथ्यों को लिखिए ।

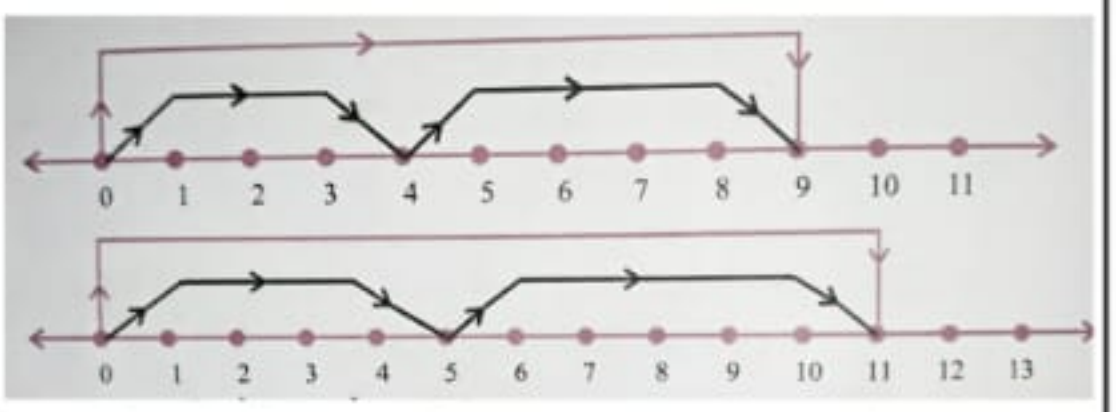

उत्तर क्रमांक 8

1• (a) हाँ (b) हाँ (c) हाँ (d) हाँ

2• (a) हाँ (b) हाँ (c) हाँ (d) हाँ

3• शून्य

रोचक तथ्य - मानव कंप्यूटर के नाम से विख्यात महान गणितज्ञ का नाम - श्रीमती शकुंतला देवी

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- GYANESHWAR P JAUNPUR

मिशन शिक्षण संवाद

मध्य पाषाण काल

मध्य पाषाण काल के औजार(उपकरण) पुरापाषाण काल की अपेक्षा आकार में छोटे हो गए। इस समय प्रकृति में अनेक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ा। नई परिस्थिति से तालमेल बैठाने के लिए उसने छोटे उपकरण बनाना प्रारंभ किया। जलवायु पहले की अपेक्षा गर्म हुई। फलस्वरुप जहां जहां बर्फ जमी थी वह पिघल गई। पृथ्वी की उर्वरा शक्ति का विकास हुआ तथा घास एवं वनस्पतियों के मैदान विकसित हुए। घास को खाने वाले छोटे छोटे जानवर जैसे हिरण, खरगोश, भेड़, बकरी आदि पैदा हुए। मानव अपने आप उगी घासों को एकत्र करने लगा। इन घासों में कई आज के अनाजों की पूर्वज थीं। इनका प्रयोग मानव ने अपने भोजन में किया। इस प्रकार अब वह संग्राहक बन गया। मानव ने इसी समय कुत्ते को पालतू बनाया। कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु है।

मध्यपाषाण कालीन औजार

कैसे हुआ खेती का ज्ञान

पुरातत्ववेत्ताओं का मत है कि अपने आप उगे हुए अनाजों को मानव ने एकत्रित करना शुरू किया। अनाज के कुछ दाने गीली मिट्टी में अथवा इधर-उधर गिरे होंगे। इन्हीं स्थानों पर फिर से वही अनाजों उगे। जब मानव ने इसे देखा तब उसे ज्ञात हुआ कि इन अनाजों के दानों से बार-बार अनाज उगाया जा सकता है। अपने इस ज्ञान का उसने परीक्षण भी किया। तब जाकर उसे खेती का ज्ञान हुआ।

अभ्यास प्रश्न

प्र01:- पुरापाषाणकाल के बाद कौन सा काल आया?
प्र02:- मानव का प्रथम पालतू पशु कौन था?
प्र03:- मानव संग्राहक कब बना?
प्र04:- मानव को खेती का ज्ञान कब हुआ?
प्र05:- मध्य पाषाणकाल के औजारों में क्या परिवर्तन हुआ?

पेज नं0-8 के उत्तर

(1) पत्थर का समय
(2) तीन। पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल, नवपाषाण काल।
(3) पुरापाषाणकाल में
(4) भौंडी और बेडौल आकृति वाले
(5) आखेटक।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- पुनीत कुमार जैन(स0अ0),9458278429,बागपत

पाषाण काल

पाषाण अर्थात पत्थर, काल अर्थात समय। मानव ने अपनी रक्षा और अपनी भूख मिटाने के लिए सर्वप्रथम पत्थर के औजारों का ही सबसे अधिक उपयोग किया इसलिए इस युग को पाषाण काल कहते हैं। पत्थर से बने औजारों में समय-समय पर परिवर्तन हुए इसलिए पाषाण युग को तीन भागों में बाँटा गया है।
(1)पुरापाषाण काल(2) मध्य पाषाणकाल(3) नवपाषाण काल

पुरापाषाण काल

पुरापाषाण काल में मानव खुले आकाश के नीचे नदियों या झीलों के किनारे रहता था। वह पत्थर के औजारों से पशुओं को शिकार करके उनका कच्चा मांस अथवा कंदमूल- फल खाता था। बाद में उसने गुफाओं में रहना प्रारंभ कर दिया क्योंकि उसे घर बनाना नहीं आता था। शिकार की खोज में वह लगातार घूमता रहता था उसका कोई स्थाई आवास नहीं था। इसी समय उसे आग की जानकारी प्राप्त हुई।

कैसे करते थे शिकार?

आदिमानव के पास नहीं जंगली जानवरों जैसे पैने नाखून नहीं थे, न ही नुकीले दांत, न जबड़े और न ही सींग। उसकी बड़ी समस्या अपने से ज्यादा ताकतवर जंगली जानवरों से रक्षा करने व उनका शिकार करने की थी। इसके लिए उसने पत्थर के औजारों का निर्माण व प्रयोग किया क्योंकि उसे पत्थर आसानी से प्राप्त हो जाते थे। यह मानव की आखेटक अवस्था थी। इस युग के पत्थर के औजार आकृति में सुडौल नहीं थे। यह बेडौल और एवं भौंडी आकृति वाले थे।

कैसे जाना, आग जलाना

पत्थर से पत्थर पर प्रहार करना

औजार बनाने के लिए वे एक पत्थर पर दूसरे पत्थर से चोट मारते थे। एक पत्थर से दूसरा पत्थर टकराने पर चिंगारी निकलती। निकलने वाली चिंगारी से उन्हें आग का ज्ञान हुआ। इससे वह सूखी पत्तियों लकड़ी की टहनियों आज को जलाने लगे। आग की खोज किस युग की महान उपलब्धि थी।

अभ्यास प्रश्न

प्र01- पाषाण काल का क्या अर्थ है?
प्र02- पाषाण काल के कितने भाग हैं?
प्र03- आग की खोज किस काल में हुई?
प्र04- पुरापाषाण काल में पत्थर के औजार कैसे थे?
प्र05- पुरापाषाण काल में मानव किस अवस्था में था?

पेज नं0-7 के उत्तर

(1) 2 करोड वर्ष पूर्व
(2) मानव विकास व विभेद की
(3) अंगूठे के कारण
(4) हाथ में मस्तिष्क को अधिक प्रयोग करना।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- पुनीत कुमार जैन(स0अ0),बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

मानव में परिवर्तन

मानव शास्त्रियों के अनुसार आज से लगभग 2 करोड वर्ष पूर्व मानव विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इस समय उसमें कुछ महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन हुए जैसे-

★ दोनों पैरों पर खड़े होकर सीधे चलना।
★ अंगूठे के कारण वस्तुओं को पकड़ने की क्षमता का विकास होना जिससे महत्वपूर्ण कार्यों को कर लेना।
★ मस्तिष्क के आकार एवं क्षमता में विस्तार।
★ मनुष्य में लंबाई, चौड़ाई और गहराई या ऊंचाई को देखने की क्षमता का होना।

मानव के शारीरिक विकास की यह प्रक्रिया चलती रही तथा उसमें धीरे-धीरे विकास होता गया जैसा कि नीचे के चित्र से स्पष्ट होता है-

मानव का विकास क्रम

इन महत्वपूर्ण बदलावों के कारण मानव अपने आसपास के वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करने लगा। उसने हाथ एवं मस्तिष्क का अधिक प्रयोग करना सीख लिया था और वह अपनी जरूरतों के लिए पत्थर के औजारों या उपकरणों का निर्माण करने लगा। इन्हीं पत्थर के उपकरणों से हमें उसके होने का पता चलता है।

मानव के विकास, विभेद आदि की जानकारी देने वाले मानव शास्त्री कहलाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्र01-मानव विकास की प्रक्रिया आज से कितने वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई?
प्र02-मानव शास्त्री कौन सी जानकारी देते हैं?
प्र03-मनुष्य में वस्तुओं को पकड़ने की विशिष्ट क्षमता किस अंग के कारण है?
प्र04-सीधे खड़े होकर दो पैरों पर चलने से मानव को क्या लाभ मिला?

पेज नं0- 5 के उत्तर

(1) आर्यों के बारे में
(2) महर्षि वाल्मीकि ने
(3) महर्षि वेदव्यास जी ने
(4) अर्थशास्त्र
(5) चीन देश का

विषय- विज्ञान पाठ- 2-पदार्थ एवं पदार्थ के समूह कक्षा - 6

प्रकरण- पदार्थों के वर्गीकरण की आवश्यकता एवं इसका आधार क्रमांक- 07

मिशन शिक्षण संवाद

हमारे चारों ओर दिखने वाली वस्तुएं

आप अपने स्कूल, घर तथा आस-पास अनेक वस्तुएँ देखते हैं जिनका आप दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। जैसे - बाल्टी, गिलास, तख्त, कुर्सी, खुरपी, हवा, पेड़-पौधे आदि। इनमें से कुछ वस्तुएँ मनुष्य द्वारा बनाई गई हैं और कुछ प्रकृति में पायी जाती हैं। ये सभी पदार्थों से मिलकर बनी होती है। हमारे आस-पास की सभी वस्तुएँ जिनमें भार होता है, जो स्थान घेरती हैं तथा जिसका ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अहसास किया जा सकता है, पदार्थ या द्रव्य कहलाती हैं। अत: प्रत्येक पदार्थ स्थान घेरता है तथा उसमें भार होता है।

आइए प्रतिदिन उपयोग होने वाली कुछ निर्जीव वस्तुओं को अपने परिवेश से एकत्र करें। इस एकत्रित संग्रह में हमारे पास हो सकता है बाल्टी, खुरपी, थाली, पहिया आदि। इन वस्तुओं को ध्यान से देखिये तथा प्रत्येक वस्तु जिन-जिन पदार्थों से बनी है उनको पहचानने का प्रयास कीजिए। बाल्टी, प्लास्टिक और लोहे से बनी है। खुरपी लोहे एवं लकड़ी से बनी है। हम देखते हैं कि कोई वस्तु एक ही पदार्थ से बनी होती है तथा ऐसा भी होता है कि एक ही वस्तु कई पदार्थों से बनी हो सकती है। जिस कार्य के लिए हमें वस्तु बनानी होती है उसी के अनुसार हम पदार्थ को भी चुनते हैं, जैसे गिलास, काँच अथवा स्टील (धातु) के बनाये जा सकते हैं।

◆पदार्थ के वर्गीकरण की आवश्यकता एवं आधार◆

आप अपने पास पड़ोस की बहुत सी वस्तुएँ देख रहे हैं। हर एक वस्तु अपने-अपने गुणों और उपयोगिता के आधार पर एक दूसरे से अलग हैं। इन वस्तुओं के अलग-अलग होते हुए भी क्या इनमें कोई समानता दिखाई देती है? किसी वस्तु की पहचान इसके आकार, बनावट, रंग, उपयोग आदि के आधार पर की जाती है। जब हम वस्तुओं को उनके विशेष गुणों, उपयोग आदि के आधार पर अलग- अलग समूहों में रखते हैं तब उनकी पहचान आसानी से की जा सकती है। वस्तुओं को उनके सामान्य लक्षणों के आधार पर अलग-अलग समूह में व्यवस्थित करने की क्रिया को वर्गीकरण कहते हैं। पदार्थ की बाह्य संरचना के आधार पर वर्गीकरण भौतिक वर्गीकरण कहलाता है तथा आन्तरिक संरचना के आधार पर वर्गीकरण रासायनिक वर्गीकरण कहलाता है। भौतिक वर्गीकरण के अन्तर्गत पदार्थ या द्रव्य को ठोस, द्रव व गैस में विभाजित किया जा सकता है। रासायनिक वर्गीकरण के अन्तर्गत पदार्थ या द्रव्य को तत्व, यौगिक एवं मिश्रण में विभाजित करते हैं।

★क्रियाकलाप★

एक पदार्थ से कई वस्तुएँ बनाई जाती हैं। नीचे दी गई तालिका को पूरित कीजिए।

क्रम	पदार्थ	वस्तु
1	लोहा	पेंच, कील, बर्तन, औजार
2	लकड़ी	....
3	काँच	....
4	मिट्टी	....

इसी प्रकार एक वस्तु के बनाने में कई प्रकार के पदार्थों का उपयोग होता है। नीचे दिये गए तालिका को पूरित कीजिए।

क्रम	वस्तु	पदार्थ
1	खुरपी	लोहा, लकड़ी
2	चश्मा	....
3	शर्ट	....
4	छाता	....

सोचिये और बताइए:-

◆क्या होगा अगर हथौड़ी काँच की बनाई जाय या गिलास कपड़े से बनाया जाए ?

◆क्या होगा अगर कीलें और स्क्रू मोम के बनाये जायें ?

◆क्या लोहे का गुब्बारा बन सकता है ?

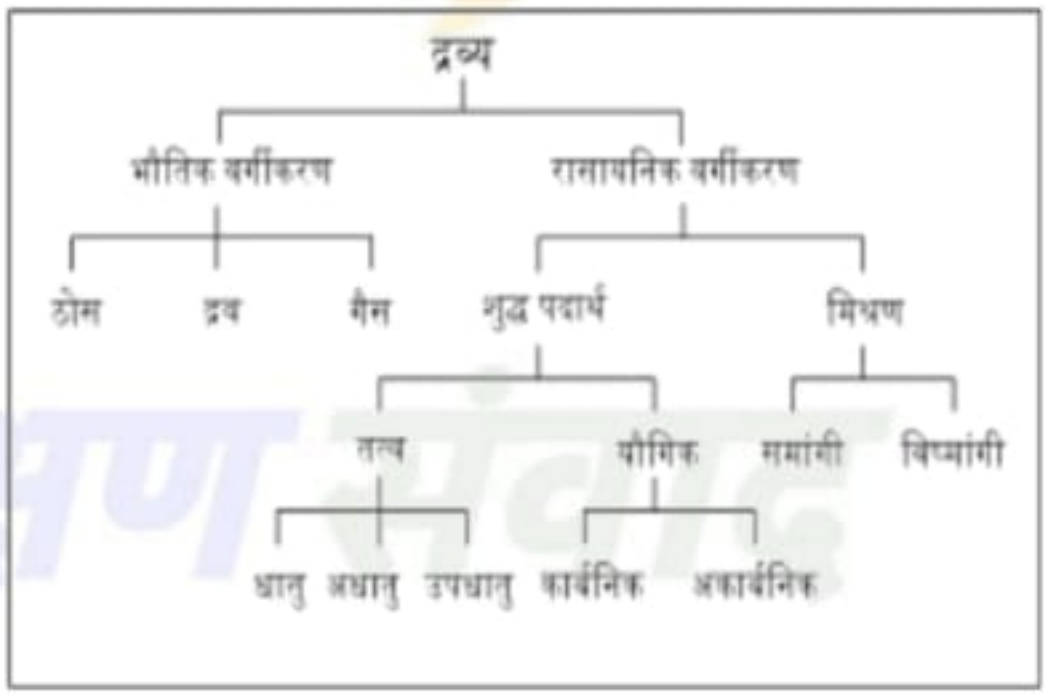

◆ क्रमांक 07 से सम्बंधित अभ्यास के प्रश्न ◆

1)दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं के नाम बताइये।
2)दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुएं कितने प्रकार की होती हैं?
3)दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुएं किससे मिलकर बनी होती हैं?
4)हमारे आस-पास की सभी वस्तुएं, जिनमें भार होता है, जो स्थान घेरती है तथा जिसका ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अहसास किया जा सकता हैं, क्या कहलाते हैं?
5)किसी वस्तु की पहचान किसके आधार पर की जाती हैं?
6)वस्तुओं को उनके सामान्य लक्षणों के आधार पर अलग-अलग समूह में व्यवस्थित करने की क्रिया को क्या कहते हैं?
7)पदार्थ की बाह्य संरचना के आधार पर किस प्रकार का वर्गीकरण होता हैं?
8)किस प्रकार का वर्गीकरण पदार्थ की आन्तरिक संरचना के आधार पर होता हैं?
9)भौतिक वर्गीकरण के आधार पर पदार्थ कितने प्रकार के होते हैं?
10)रासायनिक वर्गीकरण के आधार पर पदार्थ कितने प्रकार के होते हैं?

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार स०अ० कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, विकास खण्ड- रानीपुर, जिला- मऊ

विषय- विज्ञान पाठ- 2-पदार्थ एवं पदार्थ के समूह कक्षा - 6

प्रकरण- विभिन्न लक्षणों के आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण (भाग-1) क्रमांक- 08

मिशन शिक्षण संवाद

■विभिन्न लक्षणों के आधार पर वर्गीकरण■

【1】 ◆पदार्थ की अवस्थाओं के आधार पर◆

आपने नारियल का तेल देखा होगा। जाड़े के मौसम में यह बर्तन में ठोस के रूप में जम जाता है वहीं गर्मी में तरल (द्रव) रूप में हो जाता है। मोम ठोस रूप में है, गर्म करने पर द्रव अवस्था में परिवर्तित हो जाती है। यदि हम द्रव मोम को गर्म करते जायें तो वह मोम की वाष्प बनकर उड़ जाता है। जल को दैनिक जीवन में हम बर्फ (ठोस), जल (द्रव), तथा जलवाष्प (गैस) के रूप में देखते हैं। इस प्रकार प्रत्येक पदार्थ की तीन भौतिक अवस्थाएँ होती हैं - ठोस, द्रव तथा गैस।

★ठोस (Solid)★

काँच की गोली को एक थैले से निकालकर हाथ में लें, फिर गिलास में रखें और देखें कि क्या उसकी बनावट एवं आकार में कोई परिवर्तन होता है ? काँच की गोली को थैले में लें, हाथ में लें अथवा गिलास में लें इसका आकार व आयतन निश्चित होता है। इससे स्पष्ट है कि ठोस पदार्थों का आकार व आयतन दोनों निश्चित होता है।

ठोस पदार्थों में कण (अणु) बहुत पास-पास होते हैं, इनमें आपसी आकर्षण बल बहुत अधिक होता है जो इन्हें एक साथ बाँधे रखता है। ठोस पदार्थों के कण अपने स्थान पर लगभग स्थिर होते हैं। इसी कारण इनकी आकृति एवं आयतन दोनों निश्चित होते हैं।

★द्रव (Liquid)★

एक लीटर के नपना बर्तन को पूरा पानी से भरें। अब उस पानी को एक भगौने में उड़ेलें। हम देखते हैं कि जब नपने में था तब नपने के आकृति का दिखाई दे रहा था और जब उसे भगौने में उड़ेला गया तब उसकी आकृति भगौने जैसे दिखायी देने लगी किन्तु उसके आयतन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हम देखते हैं कि जिस बर्तन में द्रव रखा जाता है वह उसी का आकार ले लेता है। किन्तु उसका आयतन निश्चित रहता है।

ठोस पदार्थों की तुलना में द्रव के अणु एक दूसरे से दूर-दूर होते हैं। इनमें आपसी आकर्षण बल ठोस की तुलना में कम होता है जो इन्हें एक साथ बाँधे रखता है। इसी कारण द्रव पदार्थों की आकृति निश्चित नहीं होती है। किन्तु इनके कणों का एक सीमा में बँधे होने के कारण इनका आयतन निश्चित रहता है।

★गैस (Gas)★

घर में जलती हुई अगरबत्ती को देखा होगा। इनमें से काले भूरे रंग का धुआँ निकलता है। इस धुएँ की बनावट एवं आयतन दोनों निश्चित नहीं होते हैं। ये जिस स्थान पर रखे जाते हैं उसी की बनावट और आयतन प्राप्त कर लेते हैं। इस अवस्था को गैस कहते हैं। गैसीय पदार्थों में कण अपेक्षाकृत बहुत दूर-दूर होते हैं और इनमें आपसी आकर्षण बल नहीं के बराबर होता है।

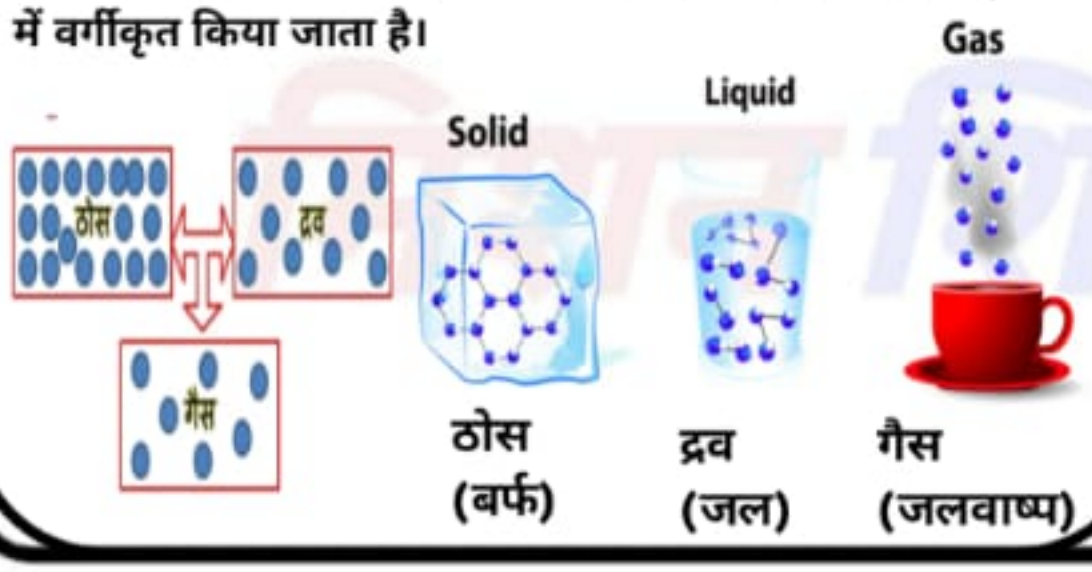

अत: पदार्थ की अवस्था के आधार पर, पदार्थों को ठोस, द्रव एवं गैस में वर्गीकृत किया जाता है।

【2】 ◆जल में घुलनशीलता के आधार पर◆

काँच के अलग-अलग गिलासों में नमक, रेत, शक्कर,चॉक पाउडर, लकड़ी के बुरादे की थोड़ी-थोड़ी मात्रा लें। प्रत्येक गिलास को पानी से आधा-आधा भरें। कुछ समय तक गिलास को सावधानी से हिलायें। क्या देखते हैं? नमक, शक्कर और चॉक पाउडर पानी में घुल जाते हैं जबकि लकड़ी का बुरादा पानी में नहीं घुलता है। किसी द्रव (जैसे पानी) में घुलने वाले पदार्थों को घुलनशील या विलेय पदार्थ कहते हैं। इसी प्रकार किसी द्रव जैसे पानी में न घुलने वाले पदार्थ को अघुलनशील या अविलेय पदार्थ कहते हैं। कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं जो एक द्रव में घुलनशील परन्तु दूसरे में अघुलनशील हैं, जैसे - नमक पानी में घुलनशील है किन्तु मिट्टी के तेल में अघुलनशील है।

इसी प्रकार आप जल में घुलनशीलता के आधार पर पदार्थों का वर्गीकरण कर सकते हैं।

◆अभ्यास के लिए प्रश्न (क्रमांक-8)◆

1) किसको हम दैनिक जीवन में बर्फ (ठोस), पानी (द्रव) तथा जलवाष्प (गैस) के रूप में देखते हैं?
2) प्रत्येक पदार्थ की कितनी भौतिक अवस्थाएँ हो सकती हैं?
3) किन पदार्थों का आकार व आयतन दोनों निश्चित होता हैं?
4) जिन पदार्थों का आयतन निश्चित और आकार निश्चित नहीं होता हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
5) किस प्रकार के पदार्थों का आकार और आयतन दोनों निश्चित नहीं होता हैं?
6) ठोस, द्रव और गैसीय पदार्थों के कणों के बीच की दूरी के आधार पर इन पदार्थों को आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
7) ठोस, द्रव और गैस के कणों के आपसी आकर्षण बल को आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
8) किसी द्रव (जैसे पानी) में घुलने वाले पदार्थों को क्या कहते हैं?
9) किसी द्रव (जैसे पानी) में न घुलने वाले पदार्थों को क्या कहते हैं?
10) एक ऐसे पदार्थ का नाम बताइये जो एक द्रव में घुलनशील परन्तु दूसरे में अघुलनशील हैं।
11)पदार्थ की अवस्थाओं के आधार पर वस्तु कितने प्रकार के हो सकते हैं?
12) जल में घुलनशीलता के आधार पर वस्तु कितने प्रकार के हो सकते हैं?

★ उत्तरमाला (क्रमांक-07) ★

10)तीन प्रकार का- तत्व, यौगिक, मिश्रण
9)तीन प्रकार का- ठोस, द्रव, गैस
8)रासायनिक वर्गीकरण
7)भौतिक वर्गीकरण
6)वर्गीकरण
5)आकार, बनावट, रंग, उपयोगिता आदि के आधार पर
4)पदार्थ या द्रव्य (matter)
3)पदार्थों से
2)दो प्रकार की- मानव निर्मित और प्राकृतिक वस्तुएं
1)बाल्टी, गिलास, कुर्सी, साबुन, कपड़ें आदि।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार, स०अ०, कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, शिक्षा क्षेत्र-रानीपुर, जनपद-मऊ

मिशन शिक्षण संवाद

SPECIAL SATURDAY

◆ Day of Practical प्रैक्टिकल का दिन ◆

★ प्रयोग: खारे पानी में तैरता अण्डा ★

यदि पीने के साधारण पानी के गिलास में हम एक अण्डा डालें, तो वह अण्डा गिलास की तली तक डूब जायेगा। परन्तु उसी पानी में नमक मिलाने पर क्या होगा? आइए जानते हैं, इसके रुचिकर परिणाम व घनत्व* (Density) के बारे में कुछ तथ्य।

आवश्यक सामग्री:
एक अण्डा, एक लम्बा काँच का गिलास, पानी, नमक, चम्मच।

प्रयोग की विधि:

1. काँच के गिलास को साधारण पानी से आधा भर लें।
2. 6 चम्मच नमक को पानी में घोलें।
3. अब सावधानी से गिलास में अतिरिक्त पानी डालें। ध्यान रहे कि साधारण पानी और खारा पानी आपस में मिले नहीं।
4. अब आराम से अण्डे को पानी के गिलास में डालिए और देखिए।

अवलोकन:
खारे पानी का घनत्व* साधारण पानी के मुकाबले ज्यादा होता है। ज्यादा घनत्व* वाले द्रव (liquid) में कोई भी वस्तु आसानी से तैरती है। जब आप अण्डे को पानी में डालते हैं, तो वह सीधे गिलास की तली की ओर गिरता है। परन्तु जैसे ही वह खारे पानी में आता है, ज्यादा घनत्व* की वजह से उसकी सतह पर तैरने लगता है।

*सबसे हल्का (सबसे कम घनत्व वाला) द्रव सबसे ऊपर तथा सबसे भारी (सबसे अधिक घनत्व वाला) सबसे नीचे रहेगा। भौतिकी में किसी पदार्थ के इकाई आयतन में निहित द्रव्यमान को उस पदार्थ का घनत्व (Density, डेंसिटी) कहते हैं।

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार, स०अ०, कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, शिक्षा क्षेत्र-रानीपुर, जनपद-मऊ

"देखिए बहिन जी !" प्रताप के शिक्षक बोले, "मैं पिछले कुछ समय से अनुभव कर रहा था कि प्रताप कक्षा में सदैव थका-थका सा रहता है। किसी कार्य में वह रुचि नहीं लेता और हर वक्त ऊँघता भी रहता है। लगभग ऐसी ही स्थिति कक्षा के कुछ अन्य बच्चों की भी देखी। यह देखकर मैंने बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच के लिए डॉक्टरों की एक टीम बुलाई। डॉक्टरों ने कहा है कि प्रताप का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसके उचित स्वास्थ्य हेतु प्रताप के खान-पान एवं नियमित दिनचर्या पर ध्यान देना होगा। जैसे- प्रताप कब सोता है ? कब जागता है ?क्या खाता-पीता है ?

अच्छा गुरुजी, एक बात बताइए ! प्रताप के पापा बोले, "स्वास्थ्य क्या है? हम किसे स्वस्थ मानेंगे ?"

'स्वस्थ' शब्द 'सु' और 'अस्थ' को मिलाकर बना है। 'सु' का अर्थ है 'सुन्दर' अथवा अच्छी एवं अस्थ का अर्थ है स्थिति। इस प्रकार जब किसी का शरीर निरोग व आकर्षक स्थिति में हो तो उसे स्वस्थ कहते हैं जबकि पूर्णतः विकार रहित अच्छी शारीरिक स्थिति ही स्वास्थ्य है।

केवल बीमारियों अथवा दुर्बलता से मुक्त रहने को ही स्वास्थ्य नहीं कहते। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से संतुलित विकास ही स्वास्थ्य है।

स्वस्थ शरीर के लक्षण:-

- निरोगी शरीर, स्वस्थ दाँत, मजबूत केश।
- पुष्ट मांसपेशियाँ, हमेशा ०चुस्त-दुरुस्त, स्फूर्तिवान रहना।
- शरीर में संक्रामक रोगों से लड़ने की क्षमता होना।
- सभी कार्यों को लगन व तत्परता से निबटाना।
- भरपूर मेहनत करना, भूख लगना एवं गहरी नींद लेना।
- सकारात्मक सोच रखना, सद्व्यवहार करना।
- शरीर के सभी अंगों व तंत्रों आदि का समुचित रूप से कार्य करना।

अभ्यास कार्य

1. प्रताप कक्षा में प्रतिदिन कैसा रहता था?
2. शिक्षक ने प्रताप के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए किसको बुलाया था?
3. नियमित दिनचर्या किसे कहते हैं?
4. नियमित दिनचर्या से क्या लाभ हैं?
5. स्वस्थ शरीर के लक्षण बताओ?
6. स्वास्थ्य क्या हैं?

उत्तर माला क्रमांक स.2

1. चेतना जोर जोर से बोल रही थी"पहला सुख निरोगी काया।"
2. मन मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए शरीर का स्वस्थ होना बहुत जरूरी हैं।
3. शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से संतुलित विकास ही स्वास्थ्य है।
4. अनियमित रहन-सहन, खान-पान, सोना-जागना ही अनियमित दिनचर्या कहलाता हैं।
5. नियमित दिनचर्या का पालन करने वाले को ही उत्तम स्वास्थ्य वाला कहते हैं।

निर्देश:-प्रतिदिन घर और आस पास के पेड़ पौधों का ध्यान रखना हैं।

विषय- गृहशिल्प पाठ- स्वास्थ्य कक्षा - 6

प्रकरण- दिनचर्या क्रमांक - 4

मिशन शिक्षण संवाद

निर्देश:-
बरसात के मौसम में जल संगरक्षण करना चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए भरपूर नींद लेना

"कुछ खास नहीं बेटा," गुरुजी बोले। तुम्हें अपनी दिनचर्या में बहुत सामान्य से परिवर्तन करने होंगे। क्या तुम जानते हो कि हमारी अनियमित दिनचर्या स्वास्थ्य के लिए कितनी नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है ? देर रात तक जागना, देर तक मोबाइल चलाना, टी.वी. देखना, सुबह देर तक सोना, जल्दी से तैयार होकर ठीक से नाश्ता न करके स्कूल चले जाना- ये सब ऐसे काम हैं जो छोटी उम्र से ही हमारे शरीर को अनेक बीमारियों का शिकार बना देते हैं और अन्त में दवाई हमारे स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए अनिवार्य हो जाती है।

निरोगी रहने के उपाय

स्वस्थ्य रहने हेतु खेल-कूद आवश्यक है
नाश्ते में पौष्टिक तत्वों जैसे- अंकुरित अन्न, फल, दूध, दलिया का सेवन करना। दिनचर्या ऐसी बनाना कि उसमें दिन भर के कार्यों के अतिरिक्त खेलकूद व मनोरंजन भी अनिवार्य रूप से शामिल हों। भरपूर मेहनत करना तथा कम से कम छह-सात घण्टे की गहरी नींद लेना- ये सब क्रियाकलाप हैं जो हमें स्वस्थ रखते हैं और हाँ, भोजन में भी हरी-पत्तेदार सब्जियाँ, दाल, सलाद, रोटी, चावल, दही जैसे पदार्थों को शामिल करना बहुत जरूरी है।"

अभ्यास कार्य

1.बहुविकल्पीय प्रश्न-
सही विकल्प के सामने दिए गए गोल घेरे को काला करिए-

(1) अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है-
(क) अत्यधिक भोजन करना
(ख) देर तक सोना
(ग) दवा का सेवन करना
(घ) नियमित व संतुलित दिनचर्या का पालन करना

(2) सुबह उठकर सबसे पहले-
(क) शौच जाना
(ख) भोजन करना
(ग) नहाना
(घ) मोबाइल चलाना

2.अतिलघु उत्तरीय प्रश्न-
(क) हमें उत्तम स्वास्थ्य के लिए कितने घंटे सोना चाहिए ?
(ख) सूर्योदय से पूर्व उठना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर माला क्रमांक स.3

1. प्रताप कक्षा में थका थका महसूस करता था।
2.शिक्षक ने विद्यालय में डॉक्टर को बुलाया था।
3. रोज के कार्य निम्न नियम पूर्वक करने को नियमित दिनचर्या कहते हैं।
4.निरोगी शरीर, स्वस्थ दाँत, मजबूत केश।पुष्ट मांसपेशियाँ, हमेशा चुस्त-दुरुस्त, स्फूर्तिवान रहना।शरीर में संक्रामक रोगों से लड़ने की क्षमता होना।सभी कार्यों को लगन व तत्परता से निबटाना।
भरपूर मेहनत करना, भूख लगना एवं गहरी नींद लेना।सकारात्मक सोच रखना, सद्व्यवहार करना।
शरीर के सभी अंगों व तंत्रों आदि का समुचित रूप से कार्य करना।
5. शारीरिक मानसिक भावनात्मक रूप से शरीर के स्वस्थ रहने को अच्छे स्वास्थ्य की निशानी कहते है

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- रंजना मिश्रा

विषय- गृहशिल्प पाठ- स्वास्थ्य कक्षा - 6

प्रकरण- दिनचर्या क्रमांक - 4

मिशन शिक्षण संवाद

पुनरावृति (पाठ -स्वास्थ्य)

प्यारे बच्चों वर्तमान समय में कोविड-19 का प्रकोप पूरे विश्व में फैला हुआ है इसलिए आप सभी सरकार के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए स्वस्थ और सुरक्षित रहे आवश्यक कार्य के लिए घर से बाहर जाएं,मास्क लगाएं,लोगों से दूरी बनाए रखें,हाथ ना मिलाएं, समय-समय पर हाथ को साबुन से धोते रहें। विद्यालय बंद है लेकिन पढ़ाई नहीं। आप घर पर रहकर कार्य करते रहें।प्रतिदिन व्यायाम, योग और स्वच्छता को अपने दिनचर्या में शामिल करें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, स्वास्थ्य सिर्फ रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नहीं बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली की स्थिति है। स्वस्थ लोग रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए और किसी भी परिवेश के मुताबिक अपना अनुकूलन करने में सक्षम होते हैं। रोग की अनुपस्थिति एक वांछनीय स्थिति है लेकिन यह स्वास्थ्य को पूर्णतया परिभाषित नहीं करता है। यह स्वास्थ्य के लिए एक कसौटी नहीं है और इसे अकेले स्वास्थ्य निर्माण के लिए पर्याप्त भी नहीं माना जा सकता है। लेकिन स्वस्थ होने का वास्तविक अर्थ अपने आप पर ध्यान केंद्रित करते हुए जीवन जीने के स्वस्थ तरीकों को अपनाया जाना है। यदि हम एक अभिन्न व्यक्तित्व की इच्छा रखते हैं तो हमें हर हमेशा खुश रहना चाहिए और मन में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि स्वास्थ्य के आयाम अलग अलग टुकड़ों की तरह है। अतः अगर हम अपने जीवन को कोई अर्थ प्रदान करना चाहते है तो हमें स्वास्थ्य के इन विभिन्न आयामों को एक साथ फिट करना पड़ेगा। वास्तव में, अच्छे स्वास्थ्य की कल्पना समग्र स्वास्थ्य का नाम है जिसमें शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य , बौद्धिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक स्वास्थ्य और सामाजिक स्वास्थ्य भी शामिल है।

निर्देश:- प्रतिदिन अपने आस-पास सफाई बनाए रखें।

अभ्यास कार्य

1. स्वास्थ्य क्या है?
2. दैनिक दिनचर्या क्या होती है?
3. अनियमित दिनचर्या क्या है?
4. नियमित दिनचर्या के क्या लाभ हैं?
5. अनियमित दिनचर्या का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
6. स्वस्थ शरीर में किस का निवास होता है?

उत्तर माला क्रमांक स.4

प्रश्न 1.

बहुविकल्पीय प्रश्नसही विकल्प के सामने दिए गए गोल घेरे को काला करिए-

(1) **अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है**

(क) अत्यधिक भोजन करना ○

(ख) देर तक सोना ○

(ग) दवा का सेवन करना ○

(घ) नियमित व संतुलित दिनचर्या का पालन करना ●

(2) **सुबह उठकर सबसे पहले**

(क) शौच जाना ●

(ख) भोजन करना ○

(ग) नहाना ○

(घ) मोबाइल चलाना ○

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) हमें उत्तम स्वास्थ्य के लिए कितने घंटे सोना चाहिए ?

उत्तर

हमें उत्तम स्वास्थ्य के लिए कम-से-कम छह-सात घंटे तक सोना चाहिए।

(ख) सूर्योदय से पूर्व उठेना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सूर्योदय से पूर्व उठना आवश्यक है।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- रंजना मिश्रा

9458278429

विषय- हिन्दी

पाठ- आप भले तो जग भला

कक्षा - 6

प्रकरण- निबंध

क्रमांक - 8

मिशन शिक्षण संवाद

नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) दुनिया कांच के महल जैसी है, अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है।

(ख) अगर आप हँसेगे तो दुनिया भी आप का साथ देगी।

(ग) शहद की एक बूंद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक शेर जहर के।

(घ) लोग दूसरों की आंखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते।

शब्दार्थ

खास = विशेष

गश खाना= मूर्छित होना

दादू =भक्तिकालीन प्रसिद्ध कवि

नुक्ताचीनी=दोष निकालने का काम

शहतीर =पाटन के नीचे लगाने वाली कड़ी।

जीवन परिचय–श्रीमन्नारायण का जन्म सन् 1912 ई०को इटावा में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा कोलकाता तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई आप गांधीवादी आर्थिक सिद्धांतों के विशेषज्ञ माने जाते हैं।आप भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य तथा गुजरात प्रांत के राज्यपाल भी रह चुके हैं।श्रीमन्नारायण का शुरू से ही साहित्य के प्रति अनुराग था।आप की प्रमुख रचनाएं हैं–'रोटी का राग'और 'मानव'।

अभ्यास प्रश्न–

प्र०1- प्रश्नों के उत्तर के रूप में चार विकल्प दिए गए हैं,सही विकल्प पर सही(√) का चिन्ह लगाइए–

(क) लोग आपसे प्रेम और नम्रता का बर्ताव करेंगे, जब आप–

1- हमेशा लोगों के एबों की ओर देखेंगे।

2- लोगों को अपना शत्रु समझेंगे।

3- लोगों की और गुस्से से दौड़ेंगे।

4- लोगों के दोष न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(ख) बापू के किस गुण के कारण लोग उनकी ओर आकृष्ट होते थे–

1- आलोचना

2- अनुशासन

3- कठोरता

4- प्रेम और सहानुभूति

उत्तर–क्रमांक 7

उ०1- जो जिसके साथ जैसा व्यवहार करता है वह बदले में वैसा ही पाता है।

उ०2- मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।

उ०3- गांधी जी के आश्रम में व्यावहारिक प्रयोग होता था जिसमें उनकी अहिंसात्मक प्रवृति बहुत उपयोगी होती थी यही कारण है कि उन्होंने अपने आश्रम को प्रयोगशाला कहा है।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शशिवाला अग्निहोत्री स.अ.U.P.S.अमेठी जदीद फर्रूखाबाद

विषय- हिंदी

प्रकरण- निबंध

पाठ-आप भले तो जग भला

कक्षा - 6

क्रमांक - 9

मिशन शिक्षण संवाद

पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) दुनिया काँच---------- पड़ती है।

भाव– जिस प्रकार, दर्पण में वास्तविक रूप दिखाई दे जाता है, उसी प्रकार, किसी को अपने व्यवहार का ही प्रतिफल प्राप्त होता है अर्थात हम जैसा आचरण करेंगे,सामने वाला भी हमारे साथ वैसा ही आचरण करेगा

(ख) अगर आप---------- साथ देगी

भाव– यह दुनिया सुख में हमेशा साथ देती है दुख में नहीं।

(ग) शहद की----------जहर है।

भाव– कई दुर्गुणों की अपेक्षा एक गुण अधिक प्रभावशाली है।

(घ) लोग----------देखते।

भाव– दूसरों के साधारण अवगुण भी शीघ्र दिखाई दे जाते हैं; जबकि अपने असाधारण दुर्गुण भी दिखाई नहीं देते।

भाषा की बात–

1–नीचे दिए गए मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

क- दिल दुखाना –कष्ट पहुंचाना
वाक्य प्रयोग– किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए।

ख– चुटकी लेना– मजाक करना।
वाक्य प्रयोग–गांधीजी मीठी चुटकी लेकर लोगों को हंसा देते थे।

ग– आग बबूला होना– नाराज होना
वाक्य प्रयोग– नौकर के घर चले जाने पर मालिक आग- बबूला हो गया।

घ– दुम हिलाना – खुशामद करना
वाक्य प्रयोग– किसी का भी दिल नहीं दुखाना चाहिए।

ङ– नुक्ताचीनी करना– दोष ढूंढना
वाक्य प्रयोग–लोगों की नुक्ताचीनी करने पर मनुष्य स्वयं घृणा का पात्र बन जाता है।

अभ्यास कार्य

1–' यह तो बड़ी अशिष्टता होगी।' इस वाक्य में 'अशिष्टता'शब्द भाववाचक संज्ञा है। भाववाचक संज्ञा शब्दों के अंत में ता,पन,पा,हट, वट,त्व प्रत्यय जुड़े रहते हैं। पाठ में आए हुए अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों को छांट कर लिखिए।

2– निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए?
आग,राजा,देवता,घर,रात,कमल

उत्तर क्रमांक- 8

(क)4– लोगों के दोष न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(ख)4– प्रेम और सहानुभूति।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-शशिवाला अग्निहोत्री स.अ.यू.पी.एस.अमेठी जदीद फर्रूखाबाद

विषय- हिन्दी

पाठ- आप भले तो जग भला

कक्षा - ६

प्रकरण- निबंध

क्रमांक - 7

मिशन शिक्षण संवाद

पाठ का सार

कांच के एक विशाल महल में एक कुत्ता घुस आया और जोर से भौकने लगा। कांच होने से बहुत सारे कुत्ते उसे अपने ऊपर भोंकते हुए दिखाई पड़े। वह उन पर झपटा तो वह भी झपटे अंत में कुत्ता गश खाकर गिर पड़ा। तभी दूसरा कुत्ता आया। वह प्रसन्नता से उछला कूदा अपनी ही छाया में खुश हुआ और फिर पूछ हिलाते हुए बाहर चला गया।

दुनिया कांच के महल के जैसी होती है।अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। "आप भले तो जग भला,"आप बुरे तो जग बुरा,अगर आप प्रसन्न चित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देख कर उनके गुणों की ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

हमें दूसरों के दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करनी चाहिए,क्योंकि शहद की एक बूंद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाए एक से जहर के। लोग दूसरों की आंखों के तिनके तो देखतेहैं,परंतु अपनी आंखों के शहतीर नहीं देखते,दूसरों को सीख देना आसान है लेकिन अपने आदर्शों पर चलना बहुत कठिन है। हमें निंदक को दूर न कर उसे सम्मान देना चाहिए क्योंकि वह हमारी गलतियों की ओर ध्यान दिला कर हम पर उपकार ही करता है।

मनुष्य को व्यवहार-कुशल होना चाहिए।जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं और अनुकूल प्रतिक्रिया करते हैं। हमें अपने आदर्श,आचार-विचार के साथ-साथ दूसरों के साथ प्रेम, सहानुभूति और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। यदि ज्ञानी मनुष्य स्वयं को सर्वज्ञ समझे तो वह सबसे बड़ा मूर्ख है।

व्याख्या

दुनिया----- हितकर होगा।

संदर्भ–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक'मंजरी'के'आप भले तो जग भला'नामक पाठ से लिया गया है।इसके लेखक श्रीमन्नारायण हैं।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बताया है कि आप-दूसरों से जिस प्रकार का व्यवहार करेंगे,दूसरे मनुष्य भी वैसा ही व्यवहार आपके साथ करेंगे।

लेखक कहता है कि सारा संसार कांच के महल जैसा है।जिस प्रकार कांच के महल में अपना रूप साफ साफ दिखाई देता है,उसी प्रकार हमारी आदत की छाया ही हमें दिखाई देती है।आप अगर खुश हो, तो संसार भी विनम्र भाव और प्रेम से बात करेगा, अगर आप दूसरों की गलतियां ही देखते रहेंगे, उन्हें अपने शत्रु समझते रहेंगे, उनकी और भोका करेंगे, तो वह भी आपकी ओर गुस्से में दौड़ेंगे अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप खुश रहेंगे, तो दुनिया भी आपका साथ देने को तैयार रहेगी। यदि आपको गुस्सा करना है और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही कल्याणकारी होगा।

शब्दार्थ

मिसाल= नमूना
सबक= शिक्षा
खास =विशेष
अमल =व्यवहार

अभ्यास प्रश्न

1-पाठ के शीर्षक"आप भले तो जग भला"का क्या आशय है?
2-"आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"इस प्रश्न का अब्राहम लिंकन ने क्या जवाब दिया?
3-गांधी जी ने अपने आश्रम को प्रयोगशाला क्यों कहा?

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शशिवाला अग्निहोत्री स.अ.यू.पी.एस.अमेठी जदीद फर्रूखाबाद

Karishma is a cute little village girl. She lives with her grandparents in a small village named Dholakpur. She loves her granny very much. Once, her loving granny takes her to the nearby City Ghazipur, to watch a magic show.

(They enter the hall)

Karishma : Wow,how colourful the hall is!

Granny : Yes,the hall is very big and decorated with bright colours.

(हिंदी अनुवाद)

करिश्मा एक प्यारी छोटी गांव की लड़की है| वह अपने दादा दादी के साथ ढोलकपुर नाम के गांव में रहती है| वह अपनी दादी को बहुत प्यार करती है| एक बार उसकी प्यारी दादी उसे जादू का खेल दिखाने पास के शहर गाजीपुर ले जाती है|

(वह एक हॉल में प्रवेश करते हैं)

करिश्मा :वाह हॉल कितना रंग बिरंगा है !

दादी :हॉंल बहुत बड़ा और चमकीले रंगों से सजा हुआ है

-Question-

1. Why did Karishma's granny take her to the city?

2. How was the hall decorated?

Word. - Meaning

Cute -क्यूट- प्यारी
Granny-ग्रैनी- दादी /नानी
Village- विलेज- गाँव
Magic- मैजिक-जादू
Decorated- डेकोरेटिड- सजाया हुआ
Bright- ब्राइट- चमकीला

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- Pratibha Sharma,Sambhal

Subject - English Chapter- The Magic Show Class - 6th

Topic - Story S.N. - 9

मिशन शिक्षण संवाद

Karishma: Granny look, how beautifully they are dressed up.
Granny: yes dear
Karishma: who is that fat man in the middle?
Granny:(pointing at the man) That man who is wearing a blue dress and has a magic stick in his hand.
Karishma: Yes granny
Granny: He is a magician. He does magic tricks.

Word.	Meaning
1. Look	देखना
2. Dear	प्रिय
3. Wear	पहनना
4.Hand	हाथ
5.Trick	करतब

हिंदी अनुवाद

करिश्मा :दादी ,देखो कितने सुंदर कपड़ों में है वो।
दादी: हाँ प्रिय।
करिश्मा: वो बीच मे मोटा आदमी कौन है?
दादी: (आदमी की ओर इशारा करते हुए) वह आदमी जो नीली पोशाक पहने है और हाथ मे जादू की छड़ी लिए है।
करिश्मा: हाँ दादी ।
दादी: वह जादूगर है। वह जादू के करतब करता है।

Answers S.N:8

Ans: The magician was wearing a blue dress and has a magic stick in his hand.

HOME WORK

Fill in the blanks
A. The children left the audience ..... with their outstanding performance .
B. My grand mother lives in a.....

Made by- Anjani Agarwal U.P.S Semarua Kanpur 9458278429

Karishma is a cute little village girl. She lives with her grandparents in a small village named Dholakpur. She loves her granny very much. Once, her loving granny takes her to the nearby City Ghazipur, to watch a magic show.

(They enter the hall)

Karishma : Wow,how colourful the hall is!

Granny : Yes,the hall is very big and decorated with bright colours.

(हिंदी अनुवाद)

करिश्मा एक प्यारी छोटी गांव की लड़की है| वह अपने दादा दादी के साथ ढोलकपुर नाम के गांव में रहती है| वह अपनी दादी को बहुत प्यार करती है| एक बार उसकी प्यारी दादी उसे जादू का खेल दिखाने पास के शहर गाजीपुर ले जाती है|

(वह एक हॉल में प्रवेश करते हैं)

करिश्मा :वाह हॉल कितना रंग बिरंगा है !

दादी :हाँल बहुत बड़ा और चमकीले रंगों से सजा हुआ है

-Question-

1.Why did Karishma's granny take her to the city?

2.How was the hall decorated?

Word. - Meaning

Cute -क्यूट- प्यारी
Granny-ग्रैनी- दादी /नानी
Village- विलेज- गाँव
Magic- मैजिक-जादू
Decorated- डेकोरेटिड- सजाया हुआ
Bright- ब्राइट- चमकीला

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- Pratibha Sharma,Sambhal

पेज-8

स्त्रीलिंग एकवचन

एषा का ?	यह कौन है?
एषा बालिका ।	यह बालिका है।
एषा किम करोति ?	यह क्या करती है?

एषा बालिका अम्बा नमति।
यह बालिका माँ को नमस्ते करती है।

द्विवचन

एते के ?	ये दोनों कौन है ?
एते अजे ।	ये दो बकरियां हैं।
एते किं कुरुत:?	ये दोनों क्या करती है।

एते अजे घासं चरत:।
ये दोनों बकरियां घास चरती हैं।

बहुवचन

एता का:?	ये सब कौन हैं?
एता बालिका।	ये सब बालिकायें हैं।

एता किं कुर्वन्ति? ये सब क्या करती है?
ये सब क्या कर रही हैं?

ऐता बालिका: पुस्तकानि पठन्ति।
यह सभी बालिकाएं पुस्तक पढ़ रही हैं। यह सभी बालिकाएं पुस्तक पढ़ती हैं।

●शब्दार्थ●

शब्द	अर्थ
ऐषा	यह
एते	ये दोनों
एता:	ये सब
घासं	घास
अजे	दो
बकरियां	
नम:	नमस्ते

अभ्यास प्रश्न

मिलान कीजिये

सर्वनाम पद	क्रिया पद
एषा	पठति
एष:	गच्छन्ति
एतौ	धावत:
ऐता:	पतति
ऐतत	नमत:
एते	खेलति

उत्तर अंक 7

1.(अ)यह घोड़ा है।
(ब)ये सब हाथी हैं।
(स)ये दो कबूतर हैं।
2.संज्ञा शब्द -अश्व: गजा: कपोतौ
सर्वनाम एष: एते एतौ

शब्द रूप- राम

कंठस्थ करो-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामाः !

गतिविधि

'राम' के रूप की तरह ही 'बालक' शब्द के रूप बनाकर लिखो।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- सचिन कुमार, पूर्व मा. विद्यालय शरीफपुर,सम्भल 9761261066

एकवचन

एषः कः ? यह कौन है

एषः छात्रः यह छात्र है।

एषः किम करोति ? यह क्या करता है।

एषः छात्रः पुस्तकं पठति।

यह छात्र पुस्तक पढ़ता है

द्विवचन

एतौ कौ ? ये दोनों कौन है ?

एतौ गजौ। ये दोनों हाथी हैं।

एतौ किं कुरुतः? ये दोनों क्या करते हैं।

एतौ गजौ जलं पिबतः।

ये दोनों हाथी जल पीते हैं।

बहुवचन

एते के ? ये सब कौन हैं ?

एते कपोताः। ये सब कबूतर हैं।

एते किं कुर्वन्ति ?ये सब क्या करते हैं?

एते कपोताः ताण्डुलान खादन्ति ?

ये सब कबूतर चावल खाते हैं

शब्दार्थ

एषः	=	यह।
एतौ	=	ये दोनों।
एते	=	ये सब।
छात्रः	=	छात्र।
गजः	=	हाथी।
कपोतः	=	कबूतर।
ताण्डुलान	=	चावल।

अभ्यास प्रश्न

1.दिये गए वाक्यों की हिन्दी लिखिये।

(अ) एषः अश्वः

(ब) एते गजाः

(स)एतौ कपोतौ।

2.प्रश्न एक में से संज्ञा व सर्वनाम शब्द अलग अलग छांटकर लिखिये।

विषय- اردو पाठ- خدا کی مہربانیاں प्रकरण- نظم कक्षा 6

मिशन शिक्षण संवाद

खुदा की महरबानिया कविता خدا کی مہربانیاں

खुदाया नहीं कोई जाये पनहा मगर तेरा दर और तेरी बारगाह खुदाया कोई यार व यावर नहीं मगर तू की मौजूद है हर कहीं खुदाया नहीं है कोई चारह गर मगर तू की है तुझ को सब की खबर खुदाया नहीं है कोई दस्त गिर मगर तू है की तू समिआ व बसीर खुदाया नहीं है कोई ग़म गसार मगर तू की है सब का परवरदिगार	خدایا نہیں کوئی جا ئے پناہ مگر تیرا در اور تیری بارگاہ خدایا کوئی یار و یاور نہیں مگر تو موجود ہے ہر کہیں خدایا نہیں ہے کوئی چارہ گر مگر تو کہ ہے تجھ کو سب کی خبر خدایا نہیں ہے کوئی دوست گیر مگر تو ہے کی ہے توسمیع و بصیر خدایا نہیں ہے کوئی غم گسار مگر تو ہے کی ہے سب کا پروردگار

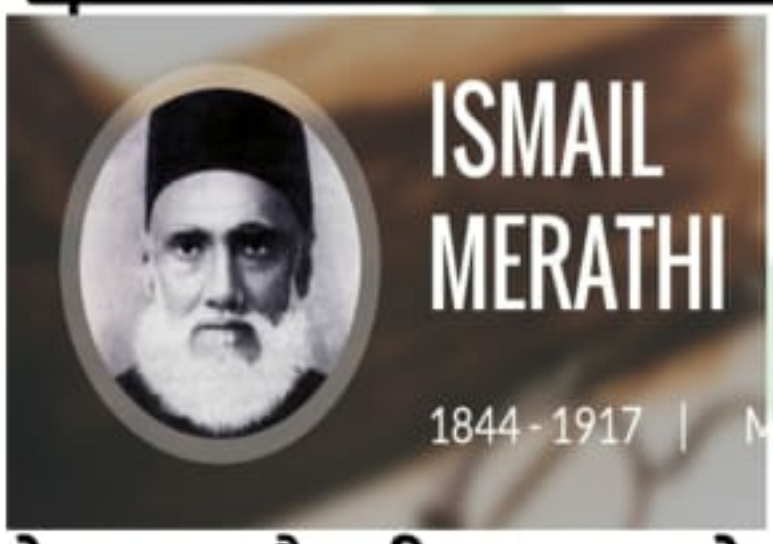

یہ نظم مولوی اسماعیل میرٹھی نے لکھی اس نظم میں انہوں نے خدا کی مہربانی و کے بارے میں بتایا ہے مولوی اسماعیل میرٹھی اردو کے بہت بڑے شاعر تھے آپ نے اردو میں بہت اچھی نظمیں غزلیں لکھی ہیں آپ اردو کے بہترین شاعر تھے۔

ये नज़्म मौलवी इस्माइल मेरठी ने लिखी है इस नज़्म में उन्होंने खुदा की दी हुई मेहरबानियों के बारे में बतया है हर तरफ खुदा ही खुदा है | मौलवी इस्माइल उर्दू के बहुत अच्छे शायर थेऔर उन्होंने उर्दू में बहुत अच्छी नज़्म व ग़ज़ल लिखी है|"खुदा की मेहबानिया" भी उनकी लिखी नज़्म है|

तशريح / तشریح नज़्म का अर्थ

اس نظم میں خدا کی مہربانی و کے بارے میں بتایا گیا ہے ہم جہاں بھی جاتے ہیں جدھر جاتے ہیں ہر طرف خدا ہی خدا ہے خدا ہیں ہمارے کام بنانے والا ہے جب بھی ہم سب پر کوئی پریشانی آتی ہے خدا ہمارا ساتھ دیتا ہے اور اپنی پناہ میں ہمیں لگتا ہے۔

इस नज़्म में खुदा (भगवान) की दी हुई सारी मेहरबानियनों के बारे में बतया गया है की खुदा (भगवान) ही हम सब की मदद करता है और वो ही सब की काम बनता है कोई किसी की मदद ना करे मगर खुदा(भगवान) सब की सुनता है हर तरफ वो ही है|

الفاظ وہ معنی

1.. جائے پناہ... خفا ظت کی جگہ

2..چارہ گر...کام بنانے والا

3...یاور...مددگار

سوال1..کون ہماری مدد کرتا ہے؟

سوال2. دیئے ئے الفاظ کے معنی لکھو
1.جائے پناہ
2.چارہ گر
3...یاور

3..اس نظم کو کس شاعر نے لیکھا؟

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- Tasleem khan

चचा नेहरू का चूड़ी दार पैजामा

چاچا نہرو کا چوڑی دار پاجامہ

الفاظ ..معنی

1-خوب صورت ....بہت اچھا لگنا

2-وضع...انداز

3-جنم....پیدا ہونا

4-عللان .... کسی بات کو لوگوں تک پہنچانا

5-سجیلے...بہت خبصورت لگنا

بچوں چاچا نہرو ہمیشہ سفید کھدّر کا چوڑی دار پا جامہ, شیروانی اور سفید کھدّر کی گاندھی ژوپی پہنتےھتے۔اور اس لباس میں بڑے خبصورت اور سجیلے لگتے تھے۔
چوڑی دار پاجامہ اور شیروانی نہ ہندوؤں کا لباس ہے نہ مسلمانوں کا بلکہ ہندوستانی لباس ہے۔ ہندو اور مسلمان تہذیب اور رہن سہن کے میل ملاپ سے جن چیزوں نے ہندوستان میں جنم لیا ان میں یہ لباس بھی شامل ہے, گویا چوڑی دار پاجامہ اور شیروانی پہن کر چاچا نہرو اعلان کرنا چاہتے تھےکی مجھے نہ ہندو سمجھو ,نہ مسلمان مجھے صرف ہندوستانی سمجھو۔ دنیا بھر میں چوڑی دار پاجامہ اور شیروانی چاچا نہرو کی وجہ سے مشہور ہو گئی اور اب امرکینوں نے شروانی کی وضع پر بنائے ہوئے نئے فیشن کے بند گلے کے کوٹوں اور واسکٹوں کا نام ہی "نہرو جیکٹ"رکھ دیا ہے۔

बच्चों आज हम सबक को पढ़ते हैचाचा नहरू हमेशा सफ़ेद खददर का चूड़ी दार पैजामा और सफ़ेद खददर की गाँधी टोपी पहनते थे और इस लिबास में बड़े खूबसूरत लगते थे| चूड़ी दार और शेरवानी ना हिंदुओं का लिबास है ना मुसलमानों का बल्कि हिंदुस्तानी लिबास है, हिन्दू और मुसलमान तहज़ीब और रहन सहन के मेल मिलाप से जिन चीजों ने जन्म लिया उन में ये लिबास भी शामिल है ऐसा लगता था जैसे चूड़ी दार पैजामा और शेरवानी पहन कर चाचा नहरू ये ऐलान करना चाहते है की मुझे ना हिन्दू समझो ना मुसलमान मुझे सिर्फ हिंदुस्तानी समझो |दुनिया भर में चूड़ी दार पैजामा और शेरवानी सिर्फ चाचा नहरू की वजह से मशहूर हो गई और बाद में अमेरिका ने शेरवानी की तरह बनाए हुए कोट और वास्केट का नाम ही नहरू जाकेट रख दिया |

گھر کا کام..

سوال1- ہندوستان کے پہلے وزیراعظم کون تھے؟

سوال2-چاچا نہرو چوڑی دار پاجامہ ارو شیروانی میں کیسےلگتے تھے؟

سوال3-ان کے کرتے پاجامہ کس کپڑے کے ہوتے تھے؟

سوال4-پنڑت نہرو کیا اعلان کرنا چاہتے تھے؟

सवाल1.. हिंदुस्तान के पहले प्रधानमंत्री(वज़ीरेआज़म) कौन थे?

सवाल2..चाचा नेहरू चूड़ी दार पैजामा और शेरवानी में कैसे लगते थे?

सवाल3.. उन के कुर्ते पैजामे किस कपड़े के होते थे?

सवाल4. पंडित नेहरू क्या ऐलान करना चाहते थे?

पेज1 का काम

جواب1- خواجہ احمد عباس کی پیدائش7june1914 میں ہوی۔

جواب2 خواجہ احمد عباس کا انتقال 1june 1987 میں ہوا۔

جواب3- پنڈت جواہر لال نہرو ہندوستان کے وزیر اعظم تھے۔

جواب4- بال دوس چودہ نومبر کو منایا جاتا ہے اور اسی دن پنڈت جواہر لال نہرو کی پیدائش ہوئی تھی۔

جواب5- پنڈت جواہر لال نہرو کے والد کا نام موتی لال نہرو تھا

नोट:-👉 बाल दिवस हम 14 नवंबर को मनाते है इस दिन ही पंडित नेहरू की पैदाइश हुई थी |

9458278429
Made by- Nadia Hasan Naqvi

چاچا نہرو کا چوڑی دار پاجامہ

चचा नहरू का चूड़ी दार पैजामा

بچوں کا آج کا سبق ہے ہمارا چاچا نہرو کا چوڑی دار پاجامہ جس کوجناب خواجہ احمد عباس نے قلم بند کیا

ख़्वाजा अहमद अब्बास

बच्चों आज का सबक है चचा नहरू का चूड़ी दार पैजामा, जिस को जनाब ख़्वाजा अहमद अब्बास ने लिखा है |

مختصر سوانح حیات

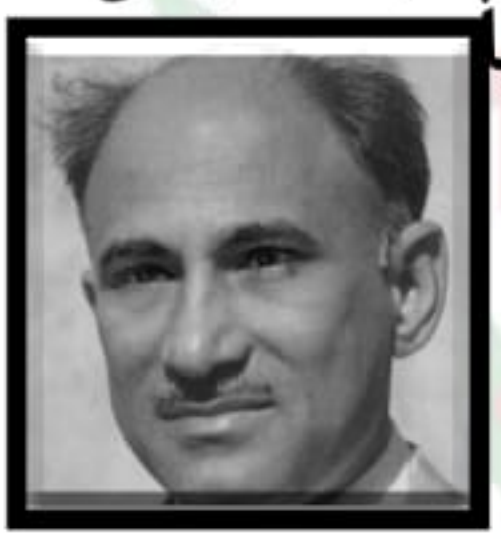

ख़्वाजा अहमद अब्बास का एक संक्षिप्त परिचय

خواجہ احمد عباس اردو کے مشہور ناول نگار ,افسانہ نویس اور ڈرامہ نگار تھے۔ آپ نے اردو میں بہت سارے مضمون لکھیے اور کی فلمیں بچوں کے لیے بنائی آپ کی وہ فلم اتنی اچھی تھی کی حکومت ہندوستان نے آپ کو انعامات سے نوازا۔ اس سبق میں انہوں نے چوڑی دار پاجامے لباس کا تعارف کرایا ہے ,جو پنڈت جواہر لال نہرو کا خاص لباس تھا۔ اس لیے اس سبق کا نام" چاچا نہرو کا چوڑی دار پاجامہ" پڑا!

ख़्वाजा अहमद अब्बास उर्दू के मशहूर नावेल निगार (उपन्यास कार) थे| उन्होंने उर्दू में बहुत से मज़मून लिखें और बहुत से डर्मा (नाटक) भी लिखें साथ ही बच्चों के लिए कई फ़िल्में भी बनाई इसके लिए सरकार से उनको पुरुस्कार भी मिला |

ख़्वाजा अहमद अब्बास का जन्म 7 जून 1914 में हुआ और उनकी मृत्यु 1जून 1987 में हुई | इस सबक(पाठ) में उन्होंने चूड़ी दार पैजामा और शेरवानी लिबास का तआरुफ़ (जानकारी)कराया है ये लिबास पंडित जवाहर लाल नहरू का ख़ास लिबास था और वो हमेशा इसी लिबास को पहनते थे|इस लिए इस सबक का नाम चचा नहरू का चूड़ी दार पैजामा रखा गया |

بچوں ہم سبق شروع کرنے سے پہلے یہ جانیں گے کی چاچا نہرو کون تھے اور ان کا نام چاچانہرو کیسے پڑا۔

پنڑت جواہر لال نہرو ہندوستان کے پہلے وزیر اعظم تھے۔ ان کے والد کا نام موتی لال نہرو اور ان کی والدہ کا نام سواروپ رانی نہرو تھا۔ پنڈت جواہر لال نہرو کی پیدائش **14** نومبر**1889** الہ آباد میں ہوئی اور ان کا انتقال **27** مئی **1964**نئی دلی میں ہوا۔ پنڈت جواہر لال نہرو بچوں سے بے حد پیار کرتے تھے اور اسی لیے انہوں نے اپنی پیدائش کے دن کو بال دوس کے روپ میں منانے کا فیصلہ کیا اور تب سے ہم لوگ **14** نومبر کو بالی دوس کے روپ میں مناتے ہیں۔ اور اسی وجہ سے بچے انہیں چاچا نہرو کہہ کر پکارتے ہیں اور اس طرح پنڈت جواہر لال نہرو کا نام چاچانہرو بھی پڑ گیا۔

बच्चों सबक शुरू करने से पहले हम ये जान लें की चचा नहरू कौन थे और उन का नाम चचा नहरू कैसे पढ़ा, पंडित जवाहर लाल नहरू बच्चों ये हमारे हिंदुस्तान के पहली प्रधानमंत्री(वज़ीर आज़म)थे| वो बच्चों से बहुत प्यार करते थे और इसी वजह से उन्होंने अपने जन्म दिवस 14 नवंबर को बाल दिवस के रूप में मानने का फैसला किया और तभी से हम सब 14 नवंबर को बाल दिवस के रूप में मानते है|बच्चे भी उनसे बहुत प्यार करते थे और उनको चचा नहरू कह कर पुकारते थे इसी वजह से जवाहर लाल नहरू का दूसरा नाम चचा नहरू पड़ गया |

گھر کا کام

سوال1۔ خواجہ احمد عباس کی پیدائش کب ہوئی؟

سوال2۔ خواجہ احمد عباس کا انتقال کب ہوا؟

سوال3۔ پنڈت جواہر لال نہرو ہندوستان کے کیا تھے؟

سوال4۔ بال دیوس کس دن منایا جاتا ہے؟

سوال5۔پنڑت جواہر لال نیرو کے والد کا کیا نام تھا؟

विषय- **कंप्यूटर** पाठ- **कंप्यूटर** कक्षा-UPS

प्रकरण-**कंप्यूटर के प्रकार** क्रमांक- **4**

मिशन शिक्षण संवाद

आकार एवं कार्य के आधार पर कंप्यूटर का विभाजन

. माइक्रो कम्प्यूटर (Micro Computer)
यह कम्प्यूटर आकार में छोटे होते है एवं कम गति से कार्य करते हैं। इन्हें पर्सनल कम्प्यूटर कहते हैं। इस कम्प्यूटर में माइक्रो प्रोसेसर का प्रयोग किया जाता है। इसमें एक सी.पी.यू., एक मॉनीटर, की-बोर्ड एवं एक माउस लगा होता है।

2. मिनी कम्प्यूटर (Mini Computer)
यह माइक्रो कम्प्यूटर से बड़ा तथा अधिक क्षमता का होता है और माइक्रोकम्प्यूटर की तुलना में अधिक तेजी से कार्य करता है इनकी संग्रहण क्षमता भी अधिक होती है।

3. मेनफ्रेम कम्प्यूटर (Mainframe Computer)
यह कम्प्यूटर आकार में माइक्रो एवं मिनी कम्प्यूटर से बड़ा होता है। ये अति उच्च संग्रह क्षमता वाले बहुत बड़े कम्प्यूटर होते हैं। इनका प्रयोग बैंकों, बड़ी कम्पनियों एवं सरकारी विभागों में होता है।

4. सुपर कम्प्यूटर (Super computer)
ये कम्प्यूटर सबसे बड़े आकार के होते हैं। यह कम्प्यूटर तेज गति एवं अत्यधिक संग्रह क्षमता वाले होते हैं। सुपर कम्प्यूटर में अनेक सी.पी.यू. होते हैं। भारत का पहला सुपर कम्प्यूटर परम-1000 है।

गृहकार्य

प्र.1 आकर एवम् कार्य के आधार पर कंप्यूटर के कितने प्रकार होते हैं?
प्र2. माइक्रो कंप्यूटर को और किस नाम से जाना जाता है?
प्र3. भारत के पहले सुपर कंप्यूटर का क्या नाम है?

उत्तरमाला (क्रमांक 3)
उ1. तीन प्रकार के।
उ2. डिजिटल कंप्यूटर में बाइनरी अंकों (०, 1) का प्रयोग होता है।
उ3. हाइब्रिड कंप्यूटर एनालॉग और डिजिटल कंप्यूटर का कॉम्बिनेशन होता है।

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- भारती मांगलिक, बुलदशहर

विषय- कम्प्यूटर पाठ- कम्प्यूटर कक्षा 5

प्रकरण- हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर क्रमांक- 5

मिशन शिक्षण संवाद

हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर

कम्प्यूटर को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

1. हार्डवेयर 2. सॉफ्टवेयर

हार्डवेयर

कम्प्यूटर के वे सभी पाटर्स जिन्हें हम हाथों से छू सकते हैं व देख सकते हैं उन्हें हार्डवेयर कहते हैं। ये कम्प्यूटर के यांत्रिक तथा इलेक्ट्रॉनिक भाग हो सकते हैं।

जैसे मॉनीटर, सी.पी.यू., स्पीकर, की-बोर्ड, प्रिंटर, स्कैनर आदि को हार्डवेयर कहते हैं।

कम्प्यूटर में निम्नलिखित हार्डवेयर का प्रयोग करते हैं।

* इनपुट डिवाइस * आउटपुट डिवाइस * सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सी.पी.यू.)

1. इनपुट डिवाइस:--

कम्प्यूटर में जिन डिवाइसों द्वारा निर्देश एवं डाटा को उपलब्ध कराया जाता है उन्हें इनपुट डिवाइस कहते हैं। जैसे - की-बोर्ड, माउस, स् कैनर, टच स्क्रीन, वेब कैमरा, लाइटपेन आदि।

2. आउटपुट डिवाइस:--

कम्प्यूटर में वे डिवाइस जिनके माध्यम से कम्प्यूटर सिस्टम से सूचना या रिजल्ट को हार्ड्डकापी के रूप में (प्रिंटर पर) या सॉफ्टकॉपी के रूप में (मॉनीटर पर) प्रदान करती हैं। जैसे-मॉनीटर, प्रिन्टर, स्पीकर, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर्स आदि।

3. सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सी.पी.यू.):--.

सी.पी.यू. कम्प्यूटर का मस्तिष्क होता है जिस प्रकार मनुष्य प्राप्त आँकड़ों का अपने मतिष्क में प्रोसेस करता है उसी प्रकार सी.पी.यू. इनपुट किये गये डेटा को प्रोसेसिंग करके उसका निष्कर्ष आउटपुट डिवाइस पर दे देता है।

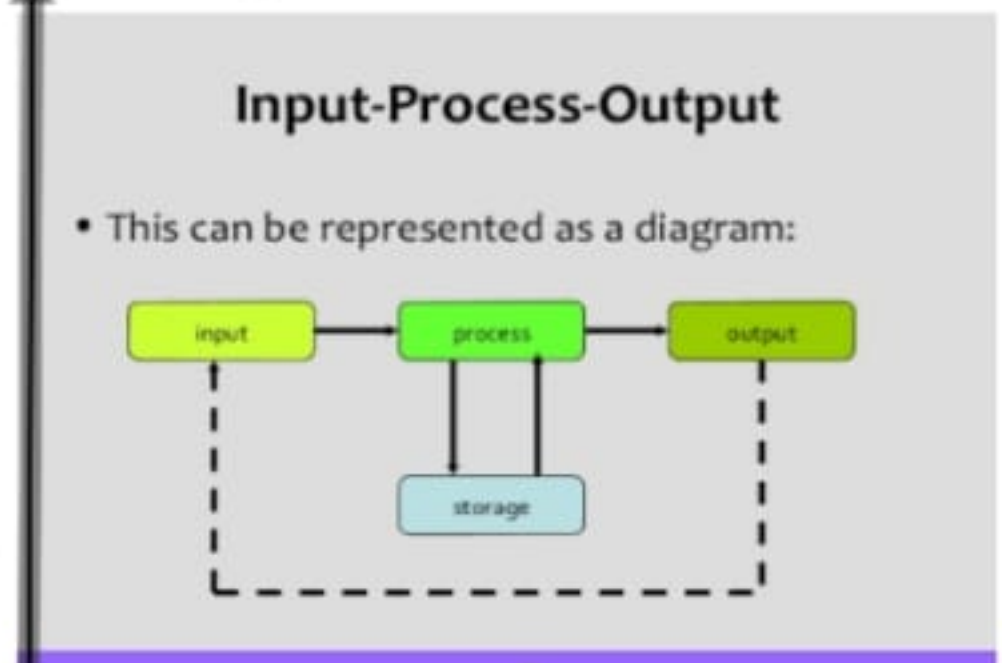

गृहकार्य

सही कथन के सामने सही (✓) तथा गलत के सामने गलत (✗) का चिन्ह लगाए—

(क) प्रिन्टर कम्प्यूटर का इनपुट यन्त्र है।

(ख) विभिन्न प्रोग्राम कम्प्यूटर सॉफ्वेयर कहलाते हैं।

(ग) माउस कम्प्यूटर का इनपुट यन्त्र है।

(घ) सी.पी.यू. कम्प्यूटर का मस्तिष्क होता है।

उत्तरमाला(क्रमांक-4)

उ.1 4 प्रकार

उ.2 पर्सनल कम्प्यूटर

उ.3 परम-1000

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- भारती मांगलिक बुलदशहर 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

स्वास्थ्य सम्बन्धी भ्रान्तियाँ दूर करें

ऐसा सोचना गलत है कि-
मोटा होना अच्छे स्वास्थ्य का सूचक है।
अच्छे स्वास्थ्य के लिए मँहगे फल खाना जरूरी है।
पोलियो ड्रॉप पीने से बुखार आ जाता है।
लड़कियों को खेलकूद में भाग नहीं लेना चाहिए।
सफेद दाग (ल्यूकोडर्मा) के रोगी के पास नहीं बैठना चाहिए।
चेचक निकलने पर झाड़फूँक कराना चाहिए।

इसे भी जानें

जानें और दूसरों को बताएँ
स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है कि हम रूढ़ियों को न मानें। रोगों को दूर करने के लिए डॉक्टर की सलाह लें।
पोलियो जैसी खतरनाक बीमारी को समूल नष्ट करने के लिए समय-समय पर बच्चों को पोलियो की खुराक निश्चित रूप से पिलवाएँ।
मानसिक रोगों से बचाव के लिए झाड़फूँक के चक्कर में न पड़कर मानसिक चिकित्सक से इलाज कराएँ।
शारीरिक और मानसिक विकास के लिये लड़के-लड़कियों को समान रूप से खेलों में भाग लेना चाहिये तथा योगासन और प्राणायाम करना चाहिए।
कृमि संक्रमण एवं एनीमिया से बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास प्रभावित होता है।
कृमि नियंत्रण के लिए एल्बेंडजॉल की दवा दी जाती है। कृमि नियंत्रण की दवाई खाने के साथ-साथ कृमि संक्रमण को रोकने के लिए नाखून छोटे रखें, हमेशा साफ पानी पिएँ, सब्ज़ियों एवं फलों को साफ पानी से धोएँ, खुले में शौच न करें एवं पैरों में जूते व चप्पल पहनें।

उत्तरमाला पेज - 7

1. खाना खाने से पहले हमें अपने हाथ साबुन से धोने चाहिए।
2. खाना समय से खाना चाहिए।
खाना खाने से पहले हाथों को साबुन से धोना चाहिए।
साफ़ जल ही पीना चाहिए।
सुबह को व्यायाम करना चाहिए।
3. टहलना चाहिए और व्यायाम करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. पोलियो जैसी खतरनाक बीमारी से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
2. कृमि संक्रमण रोकने के लिए हमें क्या उपाय करना चाहिए?
3. स्वस्थ रहने के लिए क्या करना चाहिए?

विषय-हिन्दी व्याकरण पाठ-

प्रकरण- विकारी एवं अविकारी शब्द क्रमांक-9

कक्षा -6, 7, 8

मिशन शिक्षण संवाद

आज हम विकारी व अवकारी शब्दों के बारे में जानेंगें।

प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में विभक्त किया गया है-

1. विकारी शब्द (Declinable Words)- उपयोग करते समय जिन शब्दों में कुछ परिवर्तन आ जाता है, उन्हें

*विकारी शब्द' कहते हैं। यह परिवर्तन शब्दों का विकार कहलाता है। यह विकार लिंग, वचन अथवा कारक के प्रभाव से उत्पन्न होता है; जैसे-लड़का, लड़के, लड़कियाँ, मेरा, मेरी, मेरे आदि। विकारी शब्द निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं-(1) संज्ञा, (2) सर्वनाम, (3) विशेषण. (4) क्रिया।

2. अविकारी शब्द (Indeclinable Words) - जिन शब्दों के रूप में किसी भी कारण से परिवर्तन नहीं आता,

अविकारी शब्द' कहलाते हैं; जैसे-किन्तु. परन्तु. यहाँ, वहाँ आदि। अविकारी शब्दों के चार भेद हैं-क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक।

याद रखिए-

1. वर्ग या वर्णों का ऐसे समूह, जिसका कोई अर्थ होता है उसे 'शब्द' कहते हैं।

2. शब्दों के भेद चार आधारों पर किए गए हैं-

(क) अर्थ के आधार पर, (ख) रचना के आधार पर (ग) उत्पत्ति के आधार पर (घ) प्रयोग के आधार पर

गृहकार्य-

क-विकारी व अविकारी शब्दों की परिभाषा याद करके लिखें।

ख-विकारी शब्दों के भेद लिखें।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षित Kgbv kasganj 9458278429

विषय- चित्रकला पाठ- नाव कक्षा -UPS

प्रकरण- शिल्प कला क्रमांक -

मिशन शिक्षण संवाद

आओ बच्चों कागज मोडकर नाव बनायें।

मैंने सुन्दर चित्र बनाकर अपनी नाव को सजाया है आप भी अपना मनपसंद चित्र बनाकर नाव सजायें।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- 9458278429 नीरा चौहान प्र०वि०फुगाना–2,मुजफ्फरनगर

विषय- हमारा पर्यावरण **पाठ-** जल संचयन एवं पुनर्भरण **कक्षा -** जूनियर

प्रकरण- संचयन एवं पुनर्भरण की विधियां **क्रमांक -** 8

मिशन शिक्षण संवाद

संचयन एवं पुनर्भरण की विधियाँ

1-पुनर्भरण पिट(गड्ढा)-

इसमें वर्षा जल को छतों से गड्ढे इकट्ठा कर प्रयोग में लाया जाता है।शहरी क्षेत्रों के लिए यह बहुत उपयोगी है। सामान्यतः यह पिट 1 से 2 मीटर चौड़ा तथा 2 से 3 मीटर गहरा बनाया जाता है।पिट में सबसे नीचे तल में 5 से 20 सेमी बोल्डर/पत्थर के टुकड़े, उसके मध्य से 5 से 10 मीटर बजरी तथा बजरी के ऊपर मोटी रेत 1.5 से 2 मिमी भरी जाती है।वर्षा का जल मकान की छत से एक पाइप द्वारा छोटे पिट या गड्ढे के बालू पर गिरता है और छन कर साफ जल के रूप में टैंक में इकट्ठा होता है।

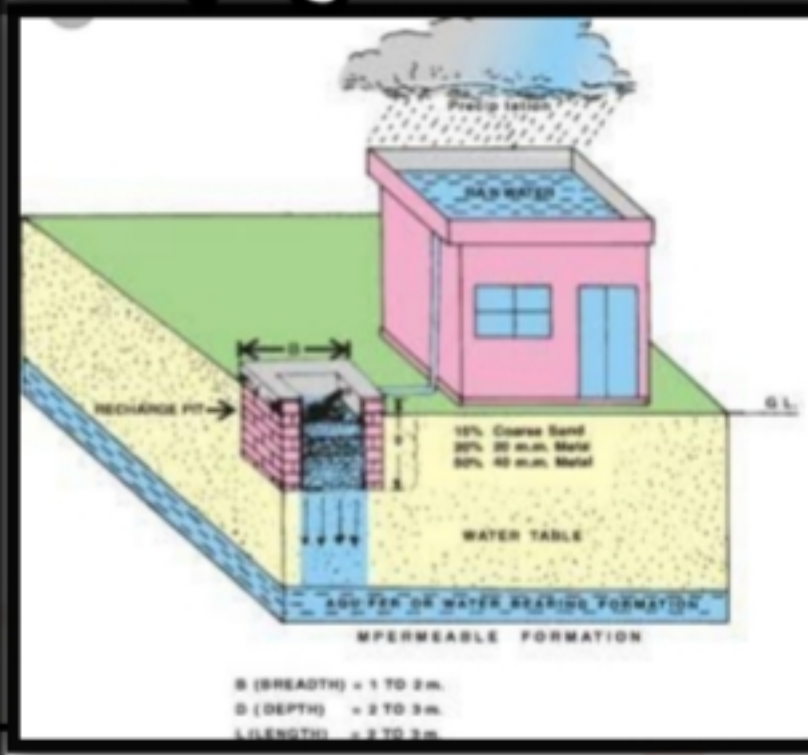

2- खाई द्वारा संचयन एवं पुनर्भरण

मकानों की छत से प्राप्त होने वाले वर्षा जल संचयन एवं पुनर्भरण के लिए खाई 0.5 से 1 मीटर चौड़ी, 1 से 1.5 मीटर गहरी तथा 10 से 20 मीटर लम्बी हो सकती। छत का पानी पाइप द्वारा एक छोटे गड्ढे में गिरता है, इस गड्ढे में 5 से 20 सेमी पत्थर की गिट्टी, बीच मे 5 से 10 सेमी बजरी तथा सबसे ऊपर मोटी बालू भरा जाता है। गड्ढे से छनकर पानी खाई में इकट्ठा हो जाता है।

3-नलकूप द्वारा जल संचयन

1-नलकूपों के नीचे के जलाशय के पुनर्भरण के लिए छत के पानी को टी आकार के पाइप मे फिल्टर लगाकर छत का पानी नलकूप मे डाला जाता है।
2-छत के पानी पाइप द्वारा पहले पत्थर के टुकड़े,बजरी तथा मोटे बालू वाले गड्ढे से साफ कर नलकूप में डाला जाता है।

4-कन्टूर बांध द्वारा जल संचयन

कम वर्षा वाले स्थानों के लिए यह विधि उपयुक्त है।इस विधि से वर्षा का जल समान ऊँचाई वाले ढलान पर चारों तरफ बांध बनाकर रोका जाता है। मिट्टी के कटाव को रोकने और सिंचाई के लिए यह विधिबहुत प्रभावी है।

5-गैबियन बांध द्वारा वर्षा जल संचयन

पानी के बहते चौडे नाले के बीच पत्थर के बोल्डर डाल कर उसे लोहे की जाल से ढक देते हैं ।लोहे की जाल पत्थरों को बहने से रोकती है।यह बरसात मे व्यर्थ बह जाने वाले पानी को अधिक समय तक रोक कर भूमि के जल स्तर को बनाये रखने में मदद करता है।

यह भी जानो-

● ढलानों और पहाडों पर छोटे नालों जिन्हें गली प्लग कहते हैं,द्वारा जल संचयन किया जाता है ।

● छोटी जलधाराओं पर चैकडैम का निर्माण कर जल संचयन होता है ।

6-पुनर्भरण कुओं द्वारा जल संचयन

चालू एवं बंद पड़े कुओं की सफाई के बाद पुनर्भरण के प्रयोग में लाया जाताहै। पुनर्भरण जल कचरे रहित होना चाहिए और कुएँ में समय पर क्लोरीन डालनी चाहिए।

उत्तर माला पेज -7

1-उपयोगी जल-3%
2-समुद्री जल -70%
3-विश्व जल दिवस -22मार्च
4-भारत जल नीति-1987
(क)पुनर्भरण
(ख)संचयन

अभ्यास कार्य

1-पहाड़ी स्थानो पर छोटे नालों को_____कहते हैं।
2-छोटी जलधाराओं पर _____ का निर्माण किया जाता है।
3-पुनर्भरण भरण पिट तथा खाई से_____से प्राप्त वर्षा जल का संचयन होता है__________

अपने परिवेश में पाये जाने वाले भू-जल और धरातलीय स्रोतों की सूची बनाओ

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम शीला सिंह (गाजीपुर), शबनम तौकीर(लखनऊ)

मिशन शिक्षण संवाद

कैसे स्वस्थ रहें -

हमारा स्वास्थ्य हमारे रहन-सहन के ढंग पर निर्भर करता है। यदि हम अपने दैनिक जीवन में स्वास्थ्य-सुरक्षा के नियमों का पालन करते हैं तो निश्चय ही हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। स्वास्थ्य का स्वच्छता एवं नियमित जीवनयापन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। रोगरहित एवं स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखें-

- बाजार की खुली हुई खाने की वस्तुएँ न खाएँ। ये वस्तुएँ धूल जमने एवं मक्खियों के बैठने से दूषित हो जाती हैं।
- शौचालय का प्रयोग करें।
- शौच के बाद हाथ साबुन से अवश्य धोएँ।
- खाना खाने के पहले हाथ साबुन से धोएँ।
- बासी भोजन न करें।
- गन्दे स्थानों पर नंगे पैर न घूमें। इससे सूक्ष्म रोगाणु शरीर में प्रवेश करके रोग पैदा कर देते हैं।
- शरीर को अच्छी तरह से साफ करें जिससे त्वचा के रोम छिद्र खुल जाए।
- स्नान के बाद सूखे कपड़े से शरीर को अवश्य पोछें।
- सड़े हुए एवं देर से कटे व खुले रखे हुए फल न खाएँ।
- नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करें।
- अपने दाँत, आँख, कान, नाक, नाखून, त्वचा, वस्त्र आदि की नियमित सफाई करें।
- सायंकालीन भोजन करने के बाद दाँतों की सफाई अवश्य करें।
- घर एवं आस-पास की नियमित सफाई करें। विद्यालय में खेल के मैदान को भी साफ-सुथरा रखें।
- प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम करें जैसे-खेलना, दौड़ना, तैरना, योगासन एवं प्राणायाम आदि।

विद्यालय के चारों ओर एवं घर के आस-पास पेड़-पौधे लगवाएँ जिससे वहाँ का वातावरण शुद्ध एवं स्वास्थ्यवर्धक हो सके।

उत्तरमाला पेज - 6

1. खाना खाने से पहले हमें अपने हाथ साबुन से धोने चाहिए।
2. खाना समय से खाना चाहिए।
खाना खाने से पहले हाथों को साबुन से धोना चाहिए।
साफ़ जल ही पीना चाहिए।
सुबह को व्यायाम करना चाहिए।
3. टहलना चाहिए और व्यायाम करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. अच्छे स्वास्थ्य के लक्षण क्या हैं?
2. बाजार की खुली हुई वस्तुओं को खाने से हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. गंदे स्थानों पर नंगे पैर क्यों नहीं घूमना चाहिए?
4. विद्यालय के चारों ओर एवं घर के आस-पास क्या लगाना चाहिए?

पृथ्वी पर जल की उपलब्धता

पृथ्वी पर तीन चौथाई भाग जल है इसमें से 97% जल समुद्र में पाया जाता है। समुद्र का जल खारा होने के कारण न पी सकते हैं और न सिंचाई में उपयोग कर सकते हैं केवल 3% जल जो भूमि के अन्दर(भू-जल) और भू-सतही जल (नदियों, तालाबों, पोखरों) का जल हम उपयोग कर सकते हैं।

पृथ्वी पर भू-जल की स्थिति

भू-जल की कमी के कारण

1- जनसंख्या बढ़ने के कारण जल की मांग भी बढ़ रही है।
2- वर्षा कम होने से भूमि के अन्दर कम जल जा रहा है
3- सिंचाई एवं उद्योगों के लिये मशीनों द्वारा अत्यधिक जल का उपयोग ।
4- वर्षा के जल को इकट्ठा न करने से ।
5- सूखे तालाबों, कुओं आदि में पुनः पानी न भरने से ।

जल संचयन एवं पुनर्भरण

वर्षा का जल धीरे-धीरे रिस-रिस कर जो धरती के अन्दर जाता है इसे प्राकृतिक पुनर्भरण कहते हैं तालाब, पोखर एवं बांध बना कर जब वर्षा के जल को रोककर रखते हैं तो इसे संचयन कहते हैं।

वर्षा जल संचयन की आवश्यकता

1- गिरते हुए भू-जल स्तर को नियंत्रित करने के लिए
2-भू-जल प्रदूषण को कम करने के लिए।
3-भू-जल स्तर की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए।
4-सूखाग्रस्त क्षेत्रों में जल की पूर्ति के लिए।
5- जल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए।

कुछ और भी जाने।

1- मनुष्य भोजन के बिना कई सप्ताह तक जीवित रह सकता है पर.जल के बिना केवल 6 दिन ।
2- मनुष्य के शरीर का 70% भाग जल है।
3- विश्व जल दिवस 22.मार्च को मनाया जाता है।
4- भारत की जलनीति 1987 में बनाई गई 2002 में इसकी घोषणा की गई।
5- राष्ट्रीय जलनीति में जल को दुर्लभ एवं बहुमूल्य राष्ट्रीय संसाधन माना गया है।

गृह कार्य

मिलान करिए

उपयोगी जल	70%
समुन्द्री जल	3%
विश्व जल दिवस	1987
भारत जल नीति	22 मार्च

खाली जगह भरिये

(क) वर्षा के जल का रिस-रिस कर अन्दर जाना_____।
(ख) तालाब, पोखर एवं बांध में वर्षा के जल को रोककर रखना_____।

उत्तरमाला क्रमांक-06

1- कुआँ, तालाब
2- नदी, तालाब,
झील
3- खारा
4-ठोस
5-70

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शबनम तौक़ीर(लखनऊ),शीला सिंह(ग़ाजीपुर) 9458278429

विषय- कला पाठ- पैगविन कक्षा -UPS

प्रकरण- शिल्पकला क्रमांक -

मिशन शिक्षण संवाद

आओ बच्चों ,आइसक्रीम स्टिक और कार्ड बोर्ड से पैगविन बनायें।

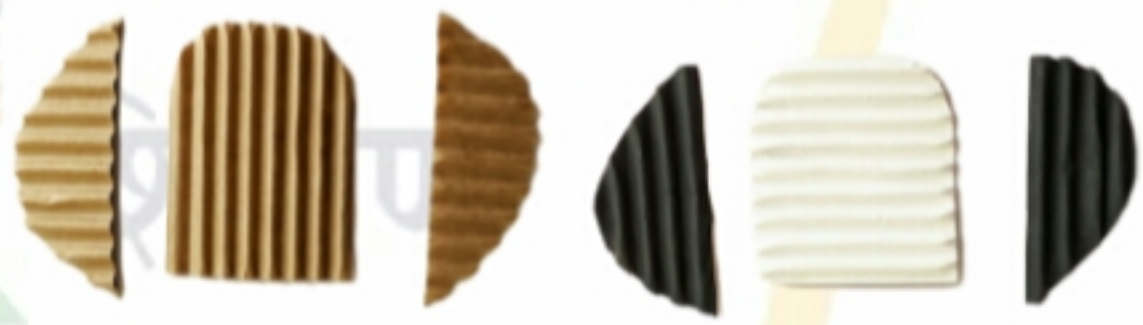

कुछ ऐसे बनाने का भी प्रयास करें।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- नीरा चौहान प्र०वि०फुगाना–2,मुजफ्फरनगर 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

जल : संसाधन के रूप में विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों में जल एक प्रमुख संसाधन है।सभी जीवधारियों के जीवन के लिए जल बहुत ही महत्वपूर्ण है एवं आवश्यक है, इसीलिए कहते हैं "जल ही जीवन" है।प्रकृति मे जल तीन रूपों में मिलता है-

1- ठोस(बर्फ) 2- द्रव(पानी) 3- गैस(भाप)

जल के स्रोत- जल के स्रोतों को मुख्यत: तीन भागों में बांट सकते हैं-

1-धरातलीय स्रोत- पृथ्वी की सतह से प्राप्त होने वाला जल धरातलीय स्रोत के अन्तर्गत आता है, जैसे समुद्र, नदियों, तालाब, झीलें आदि। **पृथ्वी पर उपस्थित समस्त जल का 97%भाग खारे समुद्री जल के रूप में है,यह घुलित लवणो के कारण खारा और न पीने योग्य है। केवल 0.6%जल ही नदियों, तालाबों और झीलों में पाया जाता है।**

2-भूमिगत स्रोत धरातलीय पर पाये जाने वाले जल का कुछ भाग रिस-रिस कर भूमि के नीचे एकत्र हो जाता है, इसे ही भूमिगत जल कहते हैं ।इस जल को कुओं, हैण्डपम्पों, नलकूपों से प्राप्त किया जाता है।

3- हिमनद पृथ्वी पर उपस्थित कुल जलभंडार का 24% भाग हिमनद और ध्रुवीय बर्फ के रूप मे पाया जाता है। यही बर्फ पिघल कर नदियों में मिलती है ।

जल के उपयोग

●कृषि और बागवानी में- फसल अनाजों, सब्जियों, फलों को उगाने और वृद्धि के लिए जल जरूरी है ।जल का कुल उपयोग की 70% मात्रा केवल सिंचाई में प्रयुक्त होती है।

●उद्योगों - उद्योगों में जल का प्रयोग बहुत अधिक होता है।जल से विद्युत उत्पादन भी होता है।जल शीतलक के रूप में, वस्तुओं को धोने, घोलने आदि मे प्रयोग होता है।

●घरेलू कामों में- हमारे दैनिक जीवन में जल पीने, नहाने-धोने, खाना बनाने, वस्तुओं को साफ करने आदि में।

●मनोरंजन में- वाटर पार्क, झरने, झीलें आदि का मनोरंजन के लिए।

●साफ- सफाई -परिवेश एवं पालतू जानवरों के साफ-सफाई में।

अभ्यास कार्य

1- भूमिगत जल स्रोत हैं-(1)____(2)_____

2- धरातलीय स्रोत के अन्तर्गत _____, _____, और _____आदि हैं

3- समुद्र का जल पीने योग्य नहीं क्यों वह_____है।

4- पहाडों पर जमी बर्फ जल का_____रूप है।

5-जल के उपयोग का सबसे अधिक _____प्रतिशत मात्रा कृषि मे प्रयुक्त होता है।

उत्तर माला पेज -5

1- मना करना 2- पुन:चक्रण करना

3- स्वास्थ्य एवं स्वच्छता 4- सूखा कचरा

5-गीला कचरा 6-धूम्र अवक्षेपक

विषय- चित्रकला पाठ- हंस कक्षा -UPS

प्रकरण- चित्रण व रंग क्रमांक -

मिशन शिक्षण संवाद

आओ बच्चों हंस बनायेंऔर रंग भरें।

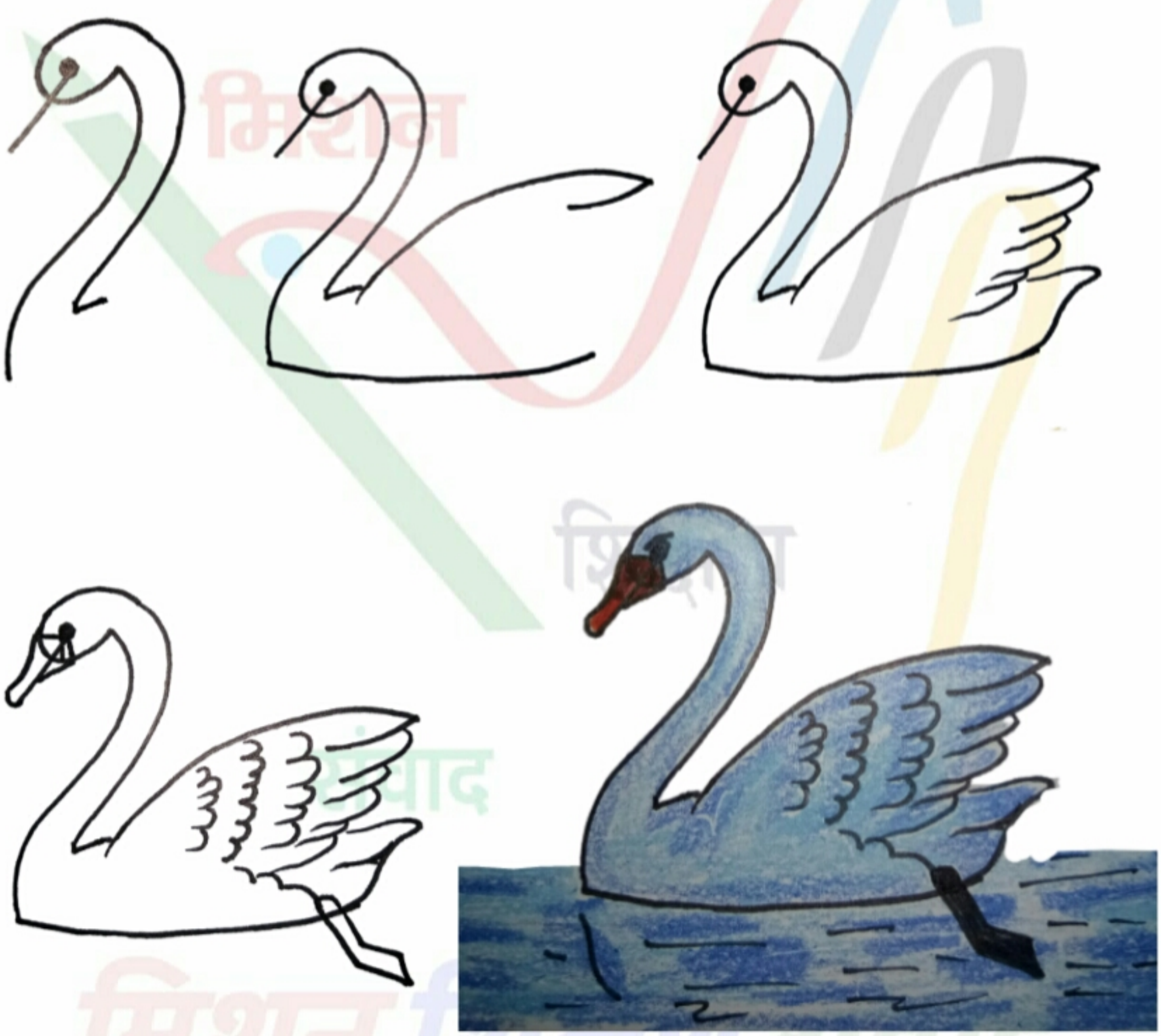

सिर्फ अंतिम चित्र अपनी कॉपी पर बनाना है।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- नीरा चौहान प्रा०वि०फुगाना–2 मुजफ्फरनगर 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

कम्प्यूटर के प्रकार

एप्लीकेशन के आधार पर कम्प्यूटर तीन प्रकार का होता है

एनालॉग कम्प्यूटर (ANALOG COMPUTER)—
ये कम्प्यूटर भौतिक राशियों के किसी सतत परिवर्तित गुण के मापन के आधार पर कार्य करते हैं।

डिजिटल कम्प्यूटर (DIGITAL COMPUTER)
ये कम्प्यूटर द्विधारी (बाइनरी) अंकों का उपयोग करते हैं। अधिकांशत: कम्प्यूटर डिजिटल कम्प्यूटर ही होते हैं।

हाईब्रिड कम्प्यूटर (HYBRID COMPUTER)
ये कम्प्यूटर एनालॉग एवं डिजिटल कम्प्यूटर दोनों का कॉम्बिनेशन होता है।

गृह कार्य

प्र०1: एप्लिकेशन के आधार पर कंप्यूटर कितने प्रकार के होते हैं?
प्र०2: डिजिटल कंप्यूटर किस प्रकार के अंकों का प्रयोग करते हैं?
प्र०3: हाइब्रिड कंप्यूटर किस कहते हैं?

उत्तर माला (क्रमांक - 2)

उ०1: अबेकस को पहला कंप्यूटर माना जाता है।
उ०2: 17 वी शताब्दी में आविष्कार किए गए मशीन में मेमोरी डाली गई थी।
उ०3: प्रथम इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर का नाम ENIAC है।
उ०4: इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर के विकास को 5 जेनरेशन में बाटा गया।

हमारा स्वास्थ्य

आज स्कूल में डॉक्टर आयी थीं। विद्यालय में बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता को भी बुलाया गया था। सभी बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच हो रही थी। बच्चों की बारी-बारी से जाँच करते हुए डॉक्टर कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें बताती जा रही थीं जैसे-

1. समय से खाना खाकर सो जाया करो।
2. खाने से पहले साबुन से हाथ धोया करो।
3. दूषित जल मत पिया करो।
4. सुबह-सुबह टहलने जाया करो। योगाभ्यास किया करो।
5. नित्य स्नान किया करो।

सुमित ने कहा इन की बातें कौन सुने ? कुछ देर पश्चात् समूह में बैठी मीता ने डॉक्टर से पूछा-डॉक्टर जी ऐसी कोई दवा बताएँ जिससे मेरी बेटी शिवानी भी मोटी हो जाय। डॉक्टर अचंभित रह गयीं। फिर उन्होंने सभी बच्चों से एक साथ पूछा-क्या मोटा होना ही स्वस्थ होना है ? बच्चों में चुप्पी छा गयी। कुछ देर बाद एक कोने से आवाज आई-और क्या? मोटा होना ही तो स्वस्थ होना है। कुछ और बच्चों ने हाँ में हाँ मिलाई। किसी ने कहा-तेज दौड़ना स्वस्थ होना है तो किसी ने बताया कि खेलना।

डॉक्टर ने कहा-लेकिन स्वस्थ होने के लिए मोटा होना आवश्यक नहीं।

फिर हम कैसे जानें कि हम स्वस्थ हैं? कई बच्चों ने एक साथ पूछा। डॉक्टर ने कहा कि यदि तुम्हें कोई रोग नहीं है और लम्बाई के अनुपात में तुम्हारा वजन सही है तथा तुम अपने सभी कार्य बिना थके कर सकते हो, तो तुम स्वस्थ हो।

अभ्यास प्रश्न

1. खाने से पहले हमे क्या करना चाहिए?
2. डाक्टर ने हमें कौन-कौन सी बातें बताई?
3. सुबह जगने के बाद क्या करना चाहिए?

(समय से सोना)

(हाथों को धोना)

(व्यायाम करना)

क्रमांक-6

शब्द-विचार(Morphology)

शब्द-
अपने विचारों को प्रकट करने के लिए हमें किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती है। अपने विचारों को प्रकट करने के लिए हम बोलते हैं तथा बोलने के लिए शब्दों की आवश्यकता पडती है। शब्द छोटा हो या बड़ा, एक वर्ण का हो या अधिक, उसका अपना अर्थ होता वर्ण या वर्णों के ऐसे समूह, जिनका कोई अर्थ होता है, को शब्द कहते हैं।

शब्दों की विशेषताएँ-
👉 शब्द वर्णों के योग से बनते हैं।
👉 शब्द से किसी अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।
👉 शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर विचारों को प्रकट करते हैं।
👉 शब्द वाक्यों में एक निश्चित स्थान रखते हैं और इसी के अनुसार इन्हें संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि शब्द भेदों में बाँटा जा सकता है।

शब्द और पद में अंतर-
जब शब्द का प्रयोग वाक्य में व्याकरण के नियमों में बँधकर होता है तो वह पद कहलाता है। वाक्य से अलग अकेला ही वह शब्द कहलाता है। 'लड़का, सुंदर, गुलाब' शब्द हैं, पद नहीं। किन्तु 'लड़का एक सुंदर गुलाब लिए है' में प्रत्येक शब्द पद कहलाएगा।

शब्दों के भेद-
हिंदी के शब्दों को चार आधारों पर अलग-अलग वर्गों में बाँटा गया है-
1. अर्थ के आधार पर
3. उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद-अर्थ के आधार पर शब्दों को दो वर्गों में बाँटा गया है-
(क) सार्थक शब्द
(ख) निरर्थक शब्द

याद रखें-
👉 वर्ग या वर्णों का समूह, जिसका कोई अर्थ होता है, को'शब्द' कहते हैं।
👉 शब्द के भेद चार आधारों पर किए गए हैं-अर्थ के, रचना के, उत्पत्ति के व प्रयोग के आधार पर

गृहकार्य-
1-शब्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखें-
2-शब्द की विशेषताएँ बताइए-

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-
Praveena dixit